सत्गुरू पूरा जे मिले पाइये रतन विचार

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश फरवरी, 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

अज दिन धरती ते उतरियाये असमानी बादशाह। अज दे दिन सचखण्ड छडिया चोला पहन लिया इन्सानी। बादशाह! अज दे दिन होया सावण शाह कृपाल इस बिच ठीक है एदा जमाल। अज दे दिन इस बिच बोलदे स्वामी अते घुमाणी बादशाह। अज दे दिन इसदा दर्स दिदार लासनी, इसदा पर उपकार लासानी। भर भर बुक वन्डे जिन्दगानी ए लफानी बादशाह। अज दे दिन। चुन चुन मोती पया पिरोई जांदा तो पिया माला सोणिया सोहवे। सबनां थांई मुबारक होवे ए बड़दानी बादशाह। अज दे दिन...

अफसर बुड्ढा हो जाये ना, ओह अन्दर बैठदा है तो बाहर एक बच्चा दौड़ने लई रख लेन्दा है। एह सब उसी (हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज) दी महिमा है भई, जो मरजी कोई कहे उना दी बखशि दा इजहार है।

मेरे ख्याल में अगर कवियों ने बहुत सारी कवितायें पढ़नी हैं, तो एक अलेहदा कवि दरबार कर दिया जाये। सत्संग जिस ग़रज के लिये है वह उसी के बारे में कुछ बयान तो किया जाता है, मगर Point यह है, अपनी अपनी, उडारियों (कल्पना की उड़ान) में कई बातें कह जाते हैं, जिनका उनको उस वक्त शायद एहसास (अनुभव) न हो। बात थोड़ी सिर्फ इतनी है कि मुझे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) के चरणों में रहना नसीब हुआ। यह उनकी खास दया थी, नहीं तो जिस तरह और दुनियाँ बह रही मैं बह रहा था।

हम रूलते फिरते कोई बात न पूछता, सत्गुरू कोरे हम थापे।

उनके चरणों में बैठा तो थोड़ी समझ बख़शी उन्होंने। वह बाकायदा Trained करते रहे। कोल (पास) बैठा बैठाकर सत्संग कराते थे। जैसा उस्ताद बच्चे को पढ़ाता है इस तरह समझाया करते थे। थोड़ी समझ उन्होंने बखशी। फिर उन्होंने यह फरमाया कि यह काम आगे करना है, यह तुम करो। उनकी दया से लोगों को फैज़ मिल रहा है। मैं आपको यही कहा करता हूं कि मैं भी आप ही की तरह एक इन्सान हूं। खुश किसमती थी मुझे हजूर के चरणों में बैठना नसीब हुआ। ग्रन्थों पोथियों के बहुत स्वाध्याय कर-कर के Parallel Study of Religions (धर्मग्रन्थों का तुलनात्मक अध्ययन करने) से कई बातें दिमाग में

समाई। वह मगर Reconcile नहीं हो सकीं। उनके चरणों में बैठने से ऐसा Keynote मिला वह बातें बिल्कुल साफ हो गई। वह ऐसी कुंजी दी गई कि अब हर एक समाज में जो चीजें मिलती हैं, वही मिल रही हैं। मुझे दो तीन लामाओं को यहां हिन्दुस्तानी में ही उपदेश का Initiate करने का, मौका मिला। तो जब वह गये तिब्बत में, तो वहां से चिट्ठी लिखते हैं कि हमारे बुद्ध मज़हब में भी यह तालीम मौजूद है। उन्होंने Extract भेजे हैं। जैन मत में भी मैंने, जो ताल्लुक बना है वहां भी जो कुछ करते हैं वह कहते हैं अन्तर में वाकई यही रस्ता है। अरे भाई इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर तो एक ही रस्ता है। जो अन्तर गये हैं, वह सब एक ही राग गाते हैं। तो मैं आप ही की तरह एक इन्सान हूं मगर इतनी खुश किसमती थी। एक मिट्टी थी वह कहीं हमाम में मिल गई। उसको सूंघा किसी ने तो बहुत खुशबूदार थी। मिट्टी से पूछा गया कि अरे भाई तू कौन है ? अम्बर है, या कि कोई कस्तूरी है। बड़ी खुशबू तुझमें है। तो कहने लगी भई मैं हूं तो वही आजिज़ मिट्टी, मगर कुछ मुद्दत मुझे खुशबूदार फूलों में रहना नसीब हो गया था, उससे मुझमें भी खुशबू समा गई, नहीं तो मैं वही आजिज़ मिट्टी हूं। अरे भई हजूर के चरणों में बैठकर, इसी तरह जैसे हम बैठे हैं, ऐसे ही बैठाकर, वह सबक पढ़ाया करते थे, घर में भी बाहर में भी। तो उसमें जो समझ आई, वह लोगों को पेश की जाती है। वह खुशबू मेरी नहीं, वह उनकी खुशबू है। अगर किसी भाई को जो भी फैज़ मिल रहा है, पुराने या नयों को, वह सब उन्हीं की दया से है, नहीं तो मैं आप ही की तरह इन्सान हूं। ऐसे ही आप लोगों को भी अगर ऐसी संगत मिल जाये तो आप भी खुशबूदार हो सकते हो। What man has done a man can do. जो एक इन्सान ने किया है, दूसरा भी कर सकता है। समझे ! तो यह थोड़ी बहुत वही मैंने अर्ज की, जो कुछ इन्होंने कहा, बात तो थोड़ी थी। थोड़ी या बहुत जैसे भी किसी को फैज़ मिल गया वह उनके लिये सब कुछ बन जाता है।

एक था डिप्टी कमीश्नर। गया किसी गाँव में। वहां आगे पटवारी की पड़ताल थी। पटवारी की पड़ताल हो गई, तो जाने लगे। वहां के जो जमींदार थे, वह समझते थे कि पटवारी ही राजा है यहां का। तो हाथ जोड़कर कहने लगे कि साहब बहादुर हम दुआ करते हैं कि तुमको परमात्मा पटवारी बनाये। समझे ! अरे भई हजूर के चरणों में बैठना नसीब हुआ तो कुछ समझ आई। वह बादशाह थे भई। आगे एक पटवारी रख भी लिया तो क्या हुआ। कई पटवारी दौड़े फिरते हैं उसके दर पर। तो यह एक समझने की बात है भई। जो किसी ने कहा वह उसका दिली उभार था। मुबारक रहे। बात असल में इतनी ही है। जब कभी भी ऐसा समय किसी भाई को मिलेगा उसकी हालत बदल सकती है। तो ऐसे पुरूषों की बड़ाई किस बात में है ? सवाल यह है। इसके बाद में थोड़ा सा जिकर करके एक शब्द पढ़ा जायेगा। उसके बाद फिर आज का सत्संग खत्म हो जायेगा। गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं —

मस्तो उठ के सुरत सम्भालो रूत बसन्त हुण आई ए।
रूत आई ते जमाल आया, दिल नूं धीरज आई ए॥

गुरू बाणी में आया है कि बसन्त किसको कहते हैं ?

जां गुरू दयाल तां सदा बसन्त।

बसन्त तो थोड़ी देर के लिये खिड़ती है ना। दस दिन, महीना भर, कहते हैं अगर अनुभवी पुरूष मिल जाये तो उसकी बसन्त ऐसी बनती है, जो हमेशा ही खिड़ती रहती है। कभी मुरझाती नहीं। तो बसन्त का सवाल है। अनुभवी पुरूष जब आता है दुनिया में, तो एक बसन्त खिड़ जाती है। जो उसके साथ लगते हैं, वह भी खिड़े रहते हैं, और सदा के लिये खिड़े रहते हैं।

मस्तो उठ के सुरत सम्भालो, रूत बसन्त हुंण आई ऐ।
रूत आई ते प्रीतम आया, दिल नूं धीरज आई ए॥
जिस पासे वल प्रीतम जान्दा, मगर नजर मेरी जावे।
जे रोकां तां रूकदी नाही, मेरी पेश न जान्दी काई ए॥
कर देवो खबर सब फुल्ला ताईं, ओ हुणं सारे ही खिड़ जांवण।
देखण चावो दिले बिच लै मिठ बोली बुलबुल आई ए॥
ऐंवें उमर गुजारी बिरथा लाहा कुछ भी खटिया ना।
इस ग़फलत दी नदिंर वल्लों मेरी राम दुहाई ए॥
दीन मजहब दे झगड़ियां बल्लों, दिल घबराया मेरा ए।
(सत्‌गुरू) दे दर दे उते मेरी नित दुहाई ऐ॥
चंचल मोहिनी माया ने है दिल दुनियाँ दा खस लिया।
रख लै सत्‌गुरू मैंनूं इसतों मेरी नित दुहाई ए॥
कुन्डल दार जुलफ है तेरी नन्दलाल उसदा ध्यान धरदा।
इस सबब जो नाल शौक दे बे करार दिल आई ऐ॥
मस्तो उठ के सुरत सम्भालो रूत बसन्त हुणं आई ए।

जिन्दगी के अन्तर किसी अनुभवी पुरूष का मिलना एक बड़ी भारी बरकत है। It is a great blessing to have a living master वह एक Overflowing (लबालब भरा) प्याला होता है, एक फुव्वारा होता है, Overflow करता हुआ। किस चीज का ? प्रभु के प्रेम का, उस (प्रभु) के रस का, उस (प्रभु) के नशे का। जो वह लफ्ज़ कहता है, वह उस नशे से Charge होकर आते हैं, रंगे हुये चले आते हैं। Out of the abundance of heart a man speaks. जो दिल में बस रही हालत है, जो कुछ इन्सान बोलता है, उससे वह रंग लेकर आते हैं लफ्ज़। एक हवा है, आग के साथ लगकर आ रही है, वह गर्म होकर

आयेगी। एक हवा है, वह बर्फ के साथ लगकर आ रही है। वह ठंडी होकर आयेगी। जो भी उस Field (मंडल) में बैठेंगे, उनको ठंडक और गर्मी पहुंचायेगी। तो अनुभवी पुरूष के अन्तर क्या है —

सुभर भरे प्रेम रस रंग। उपजे चाव साध के संग ॥

वह परमात्मा के सुभर भरे, उभर उभर कर डुलने वाले प्याले होते हैं। किसके ? उस प्रभु की याद के, प्रेम के, उसके रस और नशे के। उनको, उस मण्डल में बैठने से तुमको वैसी ही Charging मिलती है। लफ्ज़ वही हैं। जिसके हृदय में काम, क्रोध, दूसरे की ईर्षा और द्वेश, दूसरों का बुरा चितवन, Selfish Motive बस रहे हैं, कितनी भी वह मीठी जबान बरते, कितनी भी वह आला तकरीर करे, उन लफ्ज़ों में गर्मी का ही असर होगा। तो किसी अनुभवी पुरूष का मिलना मनुष्य जीवन में बड़ी भारी बरकत है। ऐसे पुरूषों की संगत का नाम ही सत्संग है।

महा पवित्र साध का संग। जिस भेटत लागे हरि रंग ॥

उसका धर्म के साथ एक सम्बन्ध बना हुआ है।

बने धर्म सेती सम्बन्ध।

जो उसका बन गया, वह धर्म जो सब सृष्टि को धार रहा है, जो उसका Mouth Piece है, जो वह लफ्ज़ कहता है, वह वेद और कुरान है, जो वह लफ्ज़ कहता है, वह बाइबल और सारी धर्म पुस्तकें कह रहीं हैं, वह उन्हीं महापुरूषों से आई हैं। अभी सवाल आया था सुबह ही मास्टर केसरसिंह जी फरमा रहे थे, कि मैं हजूर के पास गया तो मेरे दिल में यह ख्याल था कि गुरू की जरूरत नहीं है। तो उन्होंने (हजूर बाबा सावनसिंह जी) ने यह ड्यूटी लगाई कि आप मेरे पोते को थोड़ा पढ़ा देना। जब उनको पढ़ाने के लिये गया तो उनके पास किताबें नहीं थीं। लेकिन किताबों की ज़रूरत ही न पड़ी। किताबें आखिर मास्टरों की बनाई हुई हैं ना !

(यहां मास्टरजी पाठी ने एक भजन गाया जिसके बाद हजूर ने यह वचन कहे)

हर एक इन्सान एक दूसरे से उतना ही फ़ायदा उठा सकता है जितना उसने पाया है। दुनियाँ सारी ही मन के आधीन है। मन के चार Phases हैं, पहलू हैं कहो। एक चितवन का होना चित्त, फिर उसका मनन, फिर बुद्धि से तमीज़ करना, फिर निर्णय करते रहना, Inferences निकालना या उसके जाम में खुश होना, यह अहंकार है। यह मन के चार Phases हैं। जितना-जितना किसी ने पाया, उतना-उतना वह आपको बतला सकेगा। जो Inferences में आया, नतीजे अख़ज़ (निकाल) करके आपको कुछ बतला रहा है, वह आपको उसका अनुभव नहीं करा सकेगा।

मैं कानपुर गया। वहां पर गीता सम्मेलन था। तो धर्म पुस्तकों में राज़ (भेद) की बातें तो कही हैं। मगर आमिल (अनुभवी) पुरूषों के न होने सबब समझ में नहीं आ रही हैं। गीता ही लीजिये। चौथे अध्याय में बड़ा साफ कहा, छवें अध्याय में भी कि जाओ अनुभवी पुरूष के पास। सवाल करो नेक नियती से। जवाब लो। जब तसल्ली हो, फिर विश्वास बने, जो वह कहे करो, तुम भी पा जाओगे। फिर उसमें 6 वें, 8 वें, 9 वें, 10 वें, 11 वें अध्याय में और खोल खोलकर बयान किया है कि दो भूमध्य जाओ, यह करो, वह करो। अब यह एक ऐसी चीज है जो Practical (करनी का विषय) है। जब तक किसी आमिल पुरूष से नहीं सुनोगे, बात समझ नहीं आयेगी। तो एक भाई पीछे उठे। वह कहने लगे भाईयो ज़रा तैयार हो जाओ, मैं अभी तुमको प्रभु के दर्शन कराता हूं। सब बड़े खुश हो गये। खैर उसने बड़ी अच्छी Talk दी। काबिल तारीफ़ बुद्धि के लिहाज से नतीजे अख़ज़ (निकाल) करके, इस नतीजे पर पहुंचे कि कोई चीज होनी चाहिये। मगर देखा तो नहीं ना, न दिखा सके। तो मैं यह अर्ज कर रहा हूं कि जो इन्सान जिस Level (स्तर) पर है। उसके मुताबिक तुमको (Guide) कर सकता है उससे आगे नहीं। जो खुद मन-इन्द्रियों के घाट पर घिरा पड़ा हैं वह तुमको, कितनी भी आला तकरीरें करे, वह मन बुद्ध के घाट से परे न गया, न तुमको ले जा सकेगा। बड़ी मोटी बात। तो विचार की जरूरत है। पढ़ना, लिखना, बिचारना, यह पहला कदम है। ग्रन्थों पोथियों को पढ़ना यह मुस्तनिद नहीं। क्यों ? जो धर्म पुस्तकें हैं, उनमें अनुभवी पुरूषों ने जो देखा सो बयान किया। समझे।

सुन संतन को साची साखी। सो बोलें जो पेखे आखी।

उन्होंने आंखों से देखा और बयान किया है।

जब देखा तो गावां, तो गावें का फल पावां।

जो खाली Feelings में थे — परमात्मा परिपूरण है, हां परिपूरण है। ठीक है। देखा तो नहीं ! वह परिपूर्ण हालत को खाली Feelings (भावना) ही में बयान करते रहे। उनका बयान कैसे है ? एक हाथी था। उसके गिरदा गिरद पांच छह अन्धे इन्सान टटोलने लगे यह देखने के लिये कि हाथी कैसा होता है ? किसी का हाथ लात पर पड़ा। कहने लगा यह तो भई Pillar (स्तम्भ) की तरह है। दूसरे का पड़ा कान पर, वह कहने लगा यह तो भई पंखे की तरह है। तीसरे का पेट पर हाथ पड़ा, वह कहने लगा यह तो गोल है भई पीपा है गोल। किसी का सूंड पर पड़ा। वह कहने लगा भई यह तो डंडा है। अब देखा नहीं है ना, Feelings में है ना, गलती में रहे कि नहीं। जो ऐसे पुरूषों के बयानात सुनेंगे वह Feelings ही में रहेंगे, एक दूसरे से इख़तलाफ़ (विरोध) बना रहेगा। अगर किसी ऐसे से सुनेंगे जिसकी आंख खुली है, उसने देखा है, हां भई उसका पेट Barrel (पीपे) की तरह है, उसकी लातें Pillar की तरह है, कान पंखे की तरह हैं। वह तो Clear-cut पेश करेगा कि नहीं ? अगर एक आदमी ऐसे

पुरूष से मिलता है जितना सिर्फ Feelings में उसको देखा है तो वह सही बयान तो नहीं ना। तो मैं यही बयान कर रहा था, यह बात समझने के काबिल है कि हम इस दूसरे से Guide उतने ही हो सकते हैं जितने उसने पाया है। अगर वह Feelings में है तो वह Feelings चीज़ में बतायेगा, उसमें मुतज़ाद (परस्पर विरोधी) हदें रहेंगी, आपस में लड़ेंगे।

देखिये मैं एक बात और पेश करूं। परमात्मा एक है। उसकी शक्तियां मुख़तलिफ़ (भिन्न-भिन्न) काम कर रही हैं। कोई शिव का पुजारी है, कोई विष्णु भगवान का पुजारी है। शिव का पुजारी कहता है, मैं विष्णु की शक्ल नहीं देखना चाहता, विष्णु का पुजारी कहता है मैं शिव की शकल नहीं देखना चाहता। अरे भई उसी परमात्मा की ताकतें हैं, मुख़तलिफ़ काम सौंपे हुए कर रहे हैं। अब जिसकी आंख खुली है वह देखता है कि यह परमात्मा ही के Different पहलू हैं। एक जैसे Powerhouse हो, एक जगह तो आग जल रही है, एक जगह बर्फ जम रही है। अब जो अनको दिखता है भई आग और है, पानी और है। अरे भई बिजली आग ही जलाती है। वह कहता है नहीं बर्फ जमाती है। जिसने Powerhouse को देखा है, वह कहता है भई सब कुछ ठीक है। अब नजरिया मैं पेश कर रहा हूं, कि हम एक दूसरे से उतने ही Level तक समझ सकेंगे जितने Level तक वह पहुंचा है। अब Mystery of life का सवाल रहा। जिन्दगी का राज़ (भेद) क्या है ? इसको जानना है। जितना-जितना किसी ने उसका Feelings में किया तो Feeling पर बयान करेगा। Inference निकाले हैं तो Inferences पर बयान करेगा। अगर Emotions (भावावेश) में आकर नाच उठे तो वैसे ही बयान करेगा। देखा नहीं, इसलिये उनका जो बयान होगा वह सोलह आने सही नहीं। और यही झगड़े हैं। इसी खातिर वेद भगवान कहता है कि हकीकत एक है, लोगों ने अपनी बुद्धि अनुसार उसका बयान किया है। वह मजमून ऐसा है जो बुद्धि के Grasp (पकड़) में नहीं आ सकता याद रखो। बृहदारण्यक उपनिषद क्या कहता है, कि परमात्मा को बुद्धि के दायरे के अन्तर लाना इतना ही नामुमकिन है, जितना, दो मिसालें देते हैं, जैसे शराब के पीने से पानी की प्यास का बुझना नामुमकिन (असंभव) है, जैसे रेत में से तेल का निकलना नामुमकिन है। गुरु नानक साहब कहते हैं।

सोचे सोच न होवई जे सोची लख बार।

It is not a subject of thought (यह सोचने का विषय नहीं है) हाँ कुछ समझने के करीब पहुंचते हैं। है क्या, यह नहीं है तो। यह सवाल हल तब होगा जब इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षातकार होता है।

अब आप समझ रहे हैं कि जैसा पुरूष आपको मिलेगा, जिस Level (स्तर) का, उतना ही तुमको समझा सकेगा। जब तक पूर्ण पुरूष न मिले, सही नज़री नहीं बनेगी। सही नज़री कहो, विचार कहो, Right Understanding कहो इसको, जब तक आपको नहीं मिलेगी, काम नहीं बनेगा, यही कारण है, कि दुनियाँ में हर एक अपने अपने जोम (अकड़) में बैठा

है, मैं ही सच्चा हूं। बस। डंडे लिये फिरते हैं। भई एक ही हकीकत के सिर्फ मुख़तलिफ़ (विभिन्न) पहलू हैं। झगड़ा काहे का है ? जिसने पावर हौस को देखा है, वह कहता है आग भी वही जला रहा है, बर्फ भी वही जमा रहा है, पंखे भी वही चला रहा है। समझे ! वह (मन-बुद्धि के घाट पर विचार करने वाला) कहता है, पंखा कैसे चलता है ? आग है, यह तो जला देगी आग इसको। मैं यह Right Understanding को पेश कर रहा हूं। तो इसलिये कहा, बाज़े (कई) कहते हैं भई गृहस्थी अच्छा है, बाज़े कहते हैं त्याग ही अच्छा है। फिर ! कौनसा अच्छा है भई ? तो महापुरूषों ने यह कहा —

ना सुख बिच गृहस्त दे नाहीं छड़ गयों।

रहो बीच में या बाहर चलो, दोनों सूरतों में सुख नहीं मिल सकेगा —

सुख है बिच बिचार दे।

सुख Right Understanding (सही नजरी) में है। वह कहां से मिलेगी ?

सन्तां संग भया।

सन्तों की शरण में मिलेगी। सन्त जन कौन हैं ? जिन्होंने उस हकीकत को देखा है।

जब देखा तो गावा। तो गावे का फल पावा ॥

जो देखकर बयान किया वह ज्यादा ठीक होगा कि नहीं ? अब जिन्होंने देखा नहीं, ऐसे पुरूषों के बयानात पढ़ें, अब जिस Level पर वह हैं ना, बुद्धि पर है तो Inferences (नतीजे) निकालेंगे। इसका यह भी मतलब हो सकता है, इसका यह भी मतलब हो सकता है। तो एक लफ्ज़ के कई-कई मायने, कई-कई तफसीरें तो करेंगे, ठीक क्या है यह पता नहीं।

मैं एक दफा, उन्नीस सौ इक्कीस (1921) की बात है। मैं डेरा इसमाईल खान में था। एक भाई आये, कि ज्ञानी साहब आये हैं, बड़ी आला कथा करते हैं। मैं ने कहा भई आपके पास कौन सी कसौटी है जिस पर तुमने यह परखा है कि वह आला कथा करता है ? कहने लगे जी एक तुक पढ़ते हैं तो पांच-पांच अर्थ करते हैं। मैंने कहा भाई तब वह सब ही गलत करता है। महापुरूषों ने यह गुंजलदार मजमून (जटिल) जो थे, खोल-खोल कर, Simplify (सरल) करके, मौज़ूदा (वर्तमान) प्रचलित ज़बान में पेश किये, कि बात यह है। समझे ! वैसे भी हम बात करते हैं ना, हम कहें यह पंखा है, तो पंखें से मुराद घोड़ा नहीं होता, ख्वाहे उसी लफ्ज़ के पांच मायनें हों। यह जबांदानी रही ना, तो सही नज़री के लिये जिसको सही नज़री मिली है, उसकी सोहबत करो। इसीलिये मैं अर्ज करता हूं कि ग्रन्थ पोथियां यह सही नज़री रखने वालों के कलाम हैं, जो उन्होंने देखा, पाया। सही नज़री क्या थी ? थोड़े लफ्ज़ों में, हमारे पैदा करने वाला कोई है पिता, माता। अरे भई यह सबके पैदायश का भी कोई होना चाहिये। यह Inference (बुद्धि का निर्णय) है ना। चलो सही

नज़री पर पहुंचो। हम सब ही पूजा करते हैं। कोई राम, कोई अल्लाह, कोई खुदा। अरे भई राम, अल्लाह, खुदा, अलेहदा अलेहदा तो हस्तियां हैं नहीं। सबके बनाने वाला जब एक ही है, तो फिर उसी के अनेकों नाम ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने रखे। उसका तो कोई नाम नहीं भई। उसका क्या नाम है ?

नमस्तंग अनामंग।

हमारी नमस्कार है उसको जिसका कोई नाम नहीं। नाम तो महापुरूषों ने रखे। किसी ने कहा राम, वह रम रहा है। किसी ने कहा विस्वम्बर, वह सबका मालिक है। किसी ने भगवान कहा, किसी ने कुछ कहा। अरे भई यह एक ही हस्ती के नाम हैं, जिसके हम सब पुजारी हैं, उसी को पाने के लिये हम मुख़तलिफ़ (विभिन्न) समाजों में दाखल हुये हैं।

सैकड़ों आशिक है दिलआराम सबका एक है। मज़हबों मिलत जुदा हैं काम सबका एक है॥

यह बात है। सही नज़री बन गई कि नहीं ? झगड़ा काहे का है भई। कोई चमार होकर करले, रविदास जी चमार थे। कोई जुलाहा होकर करले। फिर ! नामदेव छीपा होके करले, तुलसी साहब ब्राह्मण होकर कर ले। यह ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य, हमने बनाये, परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये। आत्मा चेतन स्वरूप है। सब एक जैसे, जिसम भी एक जैसे प्रभु ने दिये हैं, अन्तर की बनावट भी एक, बाहर की भी एक जैसी है। दो आंख, दो कान, दो हाथ, दो पांव, अन्तर में मेदा है, फेफड़े हैं, दिल है, दिमाग है, खून Circulate (दौरा) करता है, हर रोज सबुह को Municipality काम करती है, गन्दगी को बाहर निकालती है, दरवाजे खोल देती है। समझे ! अगर गन्दगी अन्तर रहे, तो बिमारियां पैदा हो जाती हैं। यह सबके एक जैसे हैं। जिसको कब्ज हो जाये, उसको बिमारी हो जायेगी। तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि एक सी बनावट है अन्तर भी। सबकी आत्मा मन इन्द्रियों के आधीन है, इन्द्रियों को भोग खैच रहे हैं। शरीर रूपी रथ में आत्मा सवार है, बुद्धि उसकी रथवान है, मन रूपी घोड़े इसको भोगों रूपी खेतों में खैचें फिरते हैं। सब महापुरूष यही कहते हैं। तो एक सी बीमारी सबकी है। जिसने अपनी आत्मा को मन से, मन को इन्द्रियों से, इन्द्रियों को भोगों से हटाया है, उसने अपनी सही नज़री को पाया है। वह उसी एक के पुजारी हैं। तो ऐसे पुरूषों के पास बैठकर तुमको सही नज़री मिलेगी, सच्चा विचार मिलेगा। हमारा दुनियाँ में फंसने का कारण क्या है ? आत्मा मन के आधीन है। मन इन्द्रियों के आधीन है, इन्द्रियों को भोग खैंच रहे हैं। तो बताओ, किसी समाज में हो, यही बीमारी है कि नहीं ? अगर हम इससे उभरना चाहते हैं, निकलना चाहते हैं, तो — ''इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है। इलाज भी यही है, और जिन्होंने इन्द्रियों को दमन किया है, और मन को खड़ा किया है, जाओ उनके पास ! बड़ी मोटी बात। आलिमों के पास जाओगे वह तुमको तफसीरें सुनायेगे, एक-एक के पांच-पांच छोड़

के दस-दस अर्थ भी सुनायेंगे, Inference भी निकालेंगे मगर न देखा है न दिखा सकेंगे। तो इसलिये स्वामीजी महाराज फरमाते हैं —

जो जग से तुम उभरा चाहो।

अगर तुम जगत से उभरना चाहते हो तो,

सन्तन करो विचार।

सन्तों के विचार को पावो। वह क्या कहते हैं ? मैं गया West (पश्चिम) में। वहां उनको यही चीज़ पेश की गई। कहने लगे, भई आपने तो Truth को बड़ा सादा सा बयान कर दिया, यह मुश्किल क्यों बन गई ? मैंने उनको कहा भई उन लोगों ने जिन्होंने कि इस हकीकत को Experience नहीं किया था, बुद्धि के आधार पर तफसीरें करते चले गये, खुद नहीं मालूम, क्या-क्या है। तो बयान करते हुये इतनी तफ़सीरें बयान करी, इतनी गुन्जलदार कठिन बन गई कि असलियत भी भूल गई, और उसका समझना मुश्किल हो गया। Those who had no first hand experience of the Truth were beating about the bush. समझे ! यह बात है। तो आप देखेंगे, बाणी महापुरूषों की में फरक और आम लोगों में फरक है। तो गुरू बाणी में इस बात का निर्णय भी किया गया है। एक कच्ची बाणी है, आलिमों फाजलों की, उसको कच्ची बाणी करके बयान किया है। सन्तों की बाणी को पक्की बाणी करके बयान किया है। समझे ! और पक्की बाणी हमें क्या कहती है ? यह जो भी शब्द या बाणी हो रही है, यह किसी के आधार पर हो रही। एक गुप्ती बाणी है, एक प्रगट बाणी है। तो गुप्ती बाणी जो है, वह सबका आधार है। कब से चली है ?

बाणी वज्जी चौ जुगी सच सच्चो सुनाये।

इस बाणी का आधार प्राण, स्वांस। उस बाणी का ? वह निराधार है। उसके हम सब पुजारी हैं। तो इसलिये सही नज़री पानी हो तो क्या करो ? सत्संग किसको कहते हैं ? किसी सत्स्वरूप हस्ती की संगत का नाम है। न आलिमों की सोहबत का नाम, न फाजलों की, न ग्रन्थाकारों की, न चातुरों की, न प्रापेगण्डा करने वालों की, न Paid (वेतन पाने वाले) प्रचारकों की। तो इसलिये महापुरूष यह कहते हैं कि अरे भई तुम जिन्दगी के राज़ (भेद) को हल करना चाहते हो तो क्या करो ? सही नज़री पैदा करो। बस। जब तक सही नज़री नहीं बनेगी — सही नज़री यह हुई कि हम सब आत्मा देहधारी हैं, ख्वाहे हिन्दू हैं, ख्वाहे मुसलमान सब स्कूलों में हैं, या कॉलिजों में।

मानुष की जात सब एकै पहिचानिबो।

ख़्वाहे तुम ब्रह्मचारी हो, या जटा रखी हुई है, जंगलों में बैठे हुये हो, या शहरों में हो, क्या फरक पड़ता है ? हो तो आत्मा देहधारी ? इसमें तो कोई शक नहीं है ? आत्मा-

आत्मा सब एक हैं। सब चेतन स्वरूप हैं। सबका जीवन आधार एक है, जो इसको आधार दे रही है जिसम के अन्तर। देखो जिसम के नौ सुराख हैं, यह आत्मा को बाहर निकल जाना चाहिये ना, बह जाना चाहिये ना। बाहर क्यों नहीं निकल जाती है ? उसी वक्त निकलती है जब इसका पीछे जो आधार है, वह हटता है। समझे ! सांस बाहर ही रह जाये ? Controlled है ना ! तो जिन्होंने इस हकीकत को हल किया उनकी सोहबत करो। सही नजरी मिलेगी। जब तक सही नज़री नहीं होगी, काम नहीं बनता। Right Understanding से Right thoughts बनेंगे, सही ख्यालात बनेंगे। सही ख्यालात हुये, झगड़े काहे के रह जायेंगे ? भई आप बताओ। सही Thoughts से ही Speech होगी, जबान भी वैसे बनेगी। सबसे प्यार। देखा जो है वही बयान करेंगे दूसरा तो नहीं करेंगे, Inferences नहीं निकालेंगे, वह देखकर बयान करते हैं, और सही Speech से सही Actions (कर्म) बनेंगे सही Actions होंगे, Right Livelihood बनेगी, व्यवहार भी ठीक हो जायेगा। तो आप समझें मनुष्य जीवन का पाना, बड़े भागों से होता है। इसमें सबसे बड़ा काम जो हमने करना था, वह इस जिन्दगी के राज़ को हल करना था। समाजों में हम दाखल हुये थे इसी ग़र्ज के लिये। जहां भी किया है वहां सत्संग की महिमा का बखान किया है, कि सत्संग करो। सत् का संग। अब सत् का संग कब मिलेगा ? जब इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो, तब सत् का संग हो। अब जब तक वह न मिले, तो किसी ऐसे पुरूष की सोहबत करो जिसने सत् के संग पाया है। वह सही नज़री देगा ना।

जै सत्गुरू सत् संगत बणाई।

जहां पर कोई सत् स्वरूप हस्ती है, उसी का नाम सत् संगत है। हम क्या समझ रहे हैं ? पेट प्रचारक, पिछले, अगले, किस्से सुनाकर चले जायेंगे। बाणीं के भी एक-एक के पांच-पांच अर्थ करके चले जायेंगे। सही नज़री नहीं होगी। जितना, मुआफ करना, आजकल प्रचार हो रहा है, हर एक समाज में, शायद किसी जमाने में हुआ हो। मगर नतीजा क्या हो रहा है ? एक दूसरे से नफरत —

वही है चाल बेढंगी जो आगे थी सो अब भी है।

कहने वाले, प्रचार करने वाले मुखी पुरूष क्या कहते हैं ? वही, जीवन वैसे ही गन्दा है। फिर अगर सही नज़री हो तो दूसरों को भी वह मिले। वह कहते हैं वह करता है, हम क्यों न करें। बातें बनाने को सब कुछ समझ रखा है। तो जिन्दगी के राज़ को हल करना चाहिये। हमें क्या करना होगा ? फिर मैं यह अर्ज़ करूं, किसी ऐसे पुरूष के पास बैठे जिसको सही नज़री मिली है। तो अब इस वक्त एक शब्द गुरू नानक साहब, पहली पादशाही का आ रहा है, गौर से सुनिये वह क्या फरमाते हैं।

सत्गुरू पूरा जे मिले पाइये रतन विचार।

कहते हैं सत्गुरू — सत्गुरू किसको कहते हैं ? सत् स्वरूप हो जो —

सत्गुरू सत् स्वरूप है।

जो अनुभव पा चुका है। वह देखता है, वह करता है। वही सब में काम कर रहा है।

सत्गुरू ऐसा जानिये जो सबसे लये मिलाये जियो।

जो सबको मिलाकर बैठता है। उसका नाम सत्गुरू है। सामाजिक गुरू नहीं है, वह जगत गुरू है। वह इस नजर से आपको नहीं देखता कि तुमने किस समाज का लेबल लगाया है। वह देखता है तुम सब आत्मा देहधारी हो। सबकी आत्मा मन के आधीन है। मन इन्द्रियों के आधीन है। इन्द्रियों को भोग खेच रहे हैं। सब बुरी तरह से फंस रहे हैं। वह निकला है। लोगों को निकालने का यतन करता है। कैसे हम इन्द्रियों को बाहर से हटा सकते हैं ? कैसे मनको इन्द्रियों से छुड़ा सकते हैं ? कैसे अपनी आत्मा उससे, मन से Analyse (अलेहदा) कर सकते हैं ? यह Practical (करनी का) मजमून है। उसने किया है। दूसरों को बैठाकर थोड़ा Experience (अनुभव) देता है। दिनों दिन अभ्यास से वह बढ़ सकता है। उसी गति को पा सकता है, जिसको उसने पाया है।

सन्त और पारस में बड़ो अन्तरो जान। वह लोहा कन्चन करे वह करले आप समान।

पारस और सन्त में बड़ा भारी फ़रक है। पारस लोहे को सोना बनाता है, पारस नहीं बनाता, मगर सन्त तुमको सन्त बना देता है। इसीलिये महापुरूषों ने यही कहा कि पढ़ना, लिखना, विचारना कुछ और बात है। यह पहला कदम है। हम अभी पढ़ रहे हैं, विचार कर रहे हैं, सही नज़री को पाने के लिये, Reasoning is the help and reasoning the bar. समझने के लिये यह मददगार चीज है। अगर खाली तफसीरें ही निकालते रहो, अरे भई किसी नतीजे पर आप पहुंच गये, कुछ न कुछ, दो चार, दस महात्माओं की बाणियों के आधार पर, या किसी पर फिर वह Practical जो मजमून है, इन्द्रियों को कैसे बाहर से हटा सकते हैं ? इसको ऊँची लज्जत (आनंद) देकर बाहर से हटाना होगा, वह कैसे मिल सकती है ? कहां पर मिल सकती है ? यह एक Practical (करनी का) मजमून है। जिसने पाया है, वह तुमको देगा। तुम भी उसी तरह आज़ाद हो सकते हो जैसे वह हुआ है। तो ऐसे पुरूषों की सोहबत में जाओ। वह कहते हैं, सही नज़री कैसे मिलेगी। खाली ग्रन्थों पोथियों के पढ़ने से नहीं, याद रखो। यह अपरा विद्या में शामिल है। यह पहला कदम है, समझने के लिये। इनमें (धर्म ग्रन्थों में) क्या दिया है ? उन अनुभवी पुरूषों के कलाम जो उन्होंने अपने आपके जानने और प्रभु के पाने में अनुभव किये उनके यह एक अनमोल रतन विचार करने को हमारे शौक दिलाने के लिये हैं। धन्ने को प्रभु मिला भई। समझे ! सदने कसाई को प्रभु मिला, समझे ! गणिका को प्रभु मिला। अरे भई हमको भी मिलना चाहिये कि नहीं ? शौक

बनेगा कि नहीं ? अगर ऐसे अधोगति वाले इन्सान भी प्रभु को पा सकते हैं, तो हम क्यों नहीं पा सकते हैं ? भगवान कृष्ण जी ने क्या फरमाया, अगर दुराचारी से दुराचारी भी इन्सान हो, मेरी भक्ति में लगता है उसको अब दुराचारी न कहो। वह साधु है, उसका Angle बदल चुका है। इस Angle के बदलने के लिये हम किसी महापुरूष के पास जाते हैं। किसी महापुरूष की बाणी लो, वहां कोई न कोई Angle मिलता है। जैसे लाईन हो ना पड़ी हुई, वह लाइन और तरफ डाल देता है। वही डालेगा जो सही नज़री वाला होगा। तो ग्रन्थों पोथियों के पढ़ने से शौक बनता है। ठीक है। गवाहियां मिलती हैं। ठीक है। मगर उस गति को पाने के लिये क्या करना होगा ?

जब मुझे तलाश थी, मैं आपको अर्ज करूं, बड़ी तलाश थी। रात को बैठना, कोई किताब ले ली, सारी रात पढ़ते रहना, दिन चढ़ जाना। No way out. बड़े अच्छे विचार थे, बड़े अच्छे सब्ज बाग़ थे। बड़े अच्छे बयानात ग्रन्थों पोथियों में मिलते हैं। दिल करता है पाने को, पर कैसे पाया जाये ? वह कहते हैं प्रभु परिपूर्ण है, सब जगह है, हाजिर-नाज़र है, मगर कैसे देखा जाये ? सवाल तो यह रहा ना। यह Practical मजमून है। तो इसलिये महापुरूषों ने यह कहा। बुल्लेशाह साहब कहते हैं —

क्यों पढ़ना है गण्ड किताबां दी। सिर चानां ऐ भार अज़ाबां दी।

मुश्किल हुई ना पढ़-पढ़ कर ? दिमाग सोज़ी करते हो। Bookish Knowledge is all wilderness, there is no way out.

पढ़ लफज छोड़ हिसाबां नू। कर दूर कुफर दियां बाबां नू।

एक ही का प्यार दिल में बसा लो। बस। ग्रन्थों पोथियों के पढ़ने का मतलब क्या है ? प्रभु से प्रेम करो। तो कबीर साहब ने इसी लिये फरमाया है कि —

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पण्डित भया न कोय। ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय।

प्रेम न कर सका। पढ़ने का मतलब था, प्रभु के सब पुजारी हुये, सबसे प्यार करो। प्रभु से प्यार करो। प्रभु सब में है, सबसे प्यार हो। यह नहीं करते, आलिम भी बने, बड़े लेक्चर बाज़ भी तुम बने, सब कुछ बने, मगर ढाई अक्षर होते हैं, प्रेम के, वह न सीख सके। उसी का झगड़ा है, मुआफ करना, जितना फिसाद है। ऐसे ही लोग जिन्होंने हकीकत को नहीं पाया और आलिम फाजिल हैं, उन्हीं का पैदा किया फिसाद है थोड़े लफजों में। पढ़ने वालों आलिम फाजलों का यह काम है। उसने हकीकत को पाया है तो कहे भई यह वह हकीकत है। सब हम उसी के पुजारी हैं। झगड़ा काहे का है भई ? वह कहते हैं, नहीं हमारी सही नज़री है। वह कहते हैं नहीं हमारी है। आपस में झगड़ा रहे हैं। आप किनारे हो जाते हैं, लड़-लड़ के दूसरे मर जाते हैं। यह पाकिस्तान क्यों बना है आपको पता है ? ऐसों ही की मेहरबानी से

बना। समझे। आप किनारे हो गये, लोगों को कहा, मरते मारते वह रहे। दस पन्द्राह लाख मर गये, आदमी। बस। नतीजा क्या हुआ ! अगर सही नज़री हो तो क्यों लड़ाइयां हों ?

हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) थे। मुलतान एक दफा गये। बहुत सालों की बात है। वहां हिन्दू मुस्लिम फिसाद हो गया था। तो जब यह (हजूर) गये, इन्होंने उपदेश दिया, तो वह (लोग) कहने लगे, अगर आप पहले आ जाते तो हिन्दू मुस्लिम फिसाद न होता। महापुरूष तो मिलाने को आता है न कि तोड़ने को। बात तो यही है। वह प्रभु से जोड़ने के लिये आता है, और दुनियाँ को भी एक दूसरे से जोड़ने को आता है। उसका यही काम है। तो कहते हैं प्रेम करो। बस। प्रेम में यकसूई (एकाग्रता) है, मिलाप है, दूरी नहीं। तो पढ़ने ही से यह काम नहीं बन सकता है। तो इसलिये सच्चा विचार क्या हुआ ? प्रभु का पाना। हम उसी के पुजारी हैं ना। तो इसलिये कहा —

साचा वखर नाम है, साचा ब्यापारा।

नाम, परिपूर्ण परमात्मा को कहते हैं, जिसने खण्ड ब्रह्मण्ड बनाये हैं।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

और उसी का पाना ही सच्चा बिचार है। इसलिये क्या कहते हैं, जो असल चीज है वह नाम है। कहां से मिलता है ?

सन्तन करो बिचार।

सन्तों के पास जाओ, उस प्रभु को पाने के लिये। जिन्होंने पाया है सही नज़री को, उनके पास जाओ। बड़ी मोटी बात। सारे महापुरूष इसी बात पर जोर देते हैं। इसलिये सब महापुरूषों ने कहा कि कितने भी तुम आलिम फाजल बन जाओ, हकीकत अभी फिर भी दूर है। यह बयान है ना भाई। बयान है, बयान को पढ़कर शौक तो बनेगा थोड़ा, Hypothesis (सिद्धान्त) बना सकोगे, मगर वह चीज क्या है ? वह तो देखने से ताल्लुक रखती है ना ! तो यहां तक तुलसी साहब ने फरमा दिया कि —

चार अठारह, नौ पढ़े खट पढ़ खोया मूल।

चारों वेद, अठारहों पुराण, नौ व्याकरण, छह शास्त्र — अरे भई इसके साथ और भी धर्म पुस्तकें मिला लो दूसरे मजहबों की। कहते हैं —

सुरत शब्द चीन्हे बिना ज्यों पंछी चण्डूल ॥

जब तक तुम्हारी सुरत, आत्मा, परमात्मा महान सुरत से न मिले, अगर हमारी सुरत जो मन-इन्द्रियों के घाट पर घिरी पड़ी है, इसको आज़ाद करके अपने आपको Analyse (चिन्ह) करके, उस परिपूर्ण परमात्मा से नहीं जोड़ते, तो इस पढ़े लिखे की कीमत क्या है ? कहते हैं एक पंछी चण्डूल की तरह है, जो वह बोली सुने वही उच्चार देता है। बस। इसका

यह, मतलब नहीं कि आप पढ़ो, लिखो, विचारों नहीं। मगर खाली पढ़ना लिखना क्या हुआ। जिस ग़र्ज (उद्देश्य) के लिये है अगर उसको समझ लिया है, Right Understanding मिल गई है, फिर उसको पाने का यतन करो। तो इसीलिये और और महापुरूषों ने बहुत सारा निर्णय किया —

तब से जीवन भया संसारी। छूटे ना ग्रन्थ न होय सुखारी ॥

कितना साफ कह दिया। ग्रन्थों पोथियों को छोड़ नहीं सकता। छोड़ने से मुराद, समझ ली बात, खाली पढ़ने में ही लगा रहा।

पढ़िये जेते बरस पढ़िये जेते मास। पढ़िये जेती आरजा पढ़िये जेते सास।
नानक लेखे इक गल्ल होर हौमे झखन झास ॥

इल्म, आमिल (अनुभवी) के गले में फूलों का हार है याद रखो। वह एक बात को कई तरीकों से पेश करेगा। अगर आमिल पुरूष इल्म की डिगरियां नहीं भी लिया हुआ तो भी वह बात पते की कहेगा। समझे !

रामाकृष्ण परमहंसजी थे। उनके पास केशवचन्द्र सेन गये। तो कहने लगे, भाई अगर तुमने एक बात से समझना है तो मेरे पास आओ अगर बहुत बातों से समझना हो तो विवेकानन्द के पास चले जाओ। तो इतना ही फरक है। अगर आलिम है बेअमल, तो शेख सादी साहब कहते हैं, पढ़ा-लिखा उसके सिर पर गधे का बोझ है। गुरू अमरदास जी साहब फरमाते हैं, जैसे हलवे में कड़छी सुबह से शाम तक फिरती रहे, कोई रस नहीं है। तो सही विचार के लिये गुरू नानक साहब क्या फरमाते हैं ?

सत्‌गुरू पूरा जे मिले पाइये रतन बिचार।

विचार का जो रतन, अनमोल रतन है, वह तुमको मिलेगा, क्योंकि उसने सही नजर को पाया है, तुमको देगा। फिर सही नज़री पाने के लिये क्या करना होगा ? आगे एक और बड़ी जरूरी बात फरमाते हैं। गौर से सुनिये।

सत्‌गुरू पूरा जे मिले पाइये रतन बिचार। मन दीजे गुरू अपने पाइये सरब प्यार ॥

अब सही नज़री पाने के लिये, वह मन के घाट से ऊपर चढ़ा है। देखिये ठण्डे दिल से सोचिये, अगर तुम मन के घाट ही पर रहोगे, और उसको नहीं समझोगे वह जो कहता है। तो फिर कैसे समझोगे ? आपको पता है, स्वामी दयानन्द जी महाराज गये गुरू के पास। बगल में किताबें थी। तो गुरू ने क्या कहा ? ऐ दयानन्द ! यह किताबें तुम जमुना में फेंक आओ। क्यों ? भई जो मैंने तुमको समझाना है, वह इन किताबों से नहीं मिलेगा। हालांकि वह धर्म पुस्तकें ही थीं। जाकर फेंक आये। इससे बढ़कर और गुरू भक्ति क्या होती है आप बताओ ? उन्होंने अगर खण्डन किया है गुरू का तो भेखी (वेशधारी) गुरूओं का किया है, सचमुच

महात्मा का नहीं किया है। मैंने पढ़ा है यहां तक किताब में कि जब वह कुछ पढ़ते थे समझते नहीं थे, या गुरू समझाना चाहते थे यह समझते नहीं थे, तो गुरू उनको सोटियां मारा करते थे। उस समय दयानन्द कहते थे महाराज ! आपको बड़ा कलेश हुआ होगा। कितनी गुरू भक्ति है ! गुरू भक्ति के सिर सींग लगे हुये होते हैं ? प्यार है, दिल दिल की राह मिलता है भई। जब सत्गुरू के पास जाओ, किसी अनुभवी पुरूष के पास, Right Understanding को पाने के लिये, तो वहां पर अपने विचारों को किनारे रख दो। जो तुम जानते हो वह तो जानते ही हो। वह तो तुम्हारा कोई नहीं लेता। समझो वह क्या कहता है। वह किस Level से Talk करता है। नहीं तो हम आम लोग क्या करते हैं ? जब भी किसी अनुभवी पुरूष के पास जायें ना, अव्वल तो हम जाते ही नहीं। झगड़ा पाक। आलम अपने इल्म के घमण्ड में रह जाते हैं, हाकिम अपने हकूमत के नशे में रह जाते हैं, अमीर अपने दौलत के घमण्ड में मारे फिरते हैं। भई याद रखो अनुभवी पुरूष न रूपये से खरीदा जायेगा, न ज़ारियों से काबू में आयेगा, न जोरों से काबू में आता है।

कबीर साहब थे, मैं अरज करूं। वह धनी धर्मदास के पास गये। धर्मदास वह हस्ती है जो उनके बाद गुरू बने। बड़े अमीर थे। कहते हैं कि बारह करोड़ या चौदह करोड़ के मालिक थे। उनके घर गये। यह (महात्मा) हमेशा ढूंढते हैं किसने आगे काम करना है। यह Selection (चुनाव) नहीं होती याद रखो आदमियों की कि तुम President चुन लोगे, या कोई Member चुन लोगे। तो Commission (पर्वांनगी) होती है, उस प्रभु की तरफ से। जो अनुभवी पुरूष होता है वह देखता है कि किसने आगे काम करना है। वह बना हुआ चला आ रहा है। हाथ लगाने से न कोई महात्मा बन सकता है, न बनेगा भई। Time Factor (समय) जरूरी है। तो वह (कबीर साहब) धर्मदास के यहां चले गये। आवाज दी। खाना खा रहे थे। घरवाली ने कहा, ठहर जाओ। होता है ना सेठों को, मरदों को तो होता है, उनके घर वालों को और ज्यादा होता है कि हम बड़े अमीर, हम यह हैं, हम वह हैं। कह दिया ठहर जाओ। ठहर गये। फिर आवाज दी, कहने लगे अरे भई ठहर जाओ, खाना खा रहे हैं। फिर ठहर गये। फिर तीसरी बार ठहर कर आवाज दी। कहने लगे अरे भई तुम बड़े पापी हो, बार-बार आवाज देते हो, तुम ठहरते क्यों नहीं ? कहने लगे, मैं पापी तो नहीं, पापी तो तुम हो। देखो लकड़ियों में कीड़े जल रहे हैं। इतना कहा और चले गये। देखा तो सचमुच कीड़े जल रहे थे। तो धर्मदास जी ने कहा कि भई तुने बड़ा जुल्म किया, यह फकीर था, जानों जान था तूने निरादरी की। कहने लगी, कोई बात नहीं, गुड़ पर मक्खियां इकट्ठी हो सकती हैं। यह आवाज कबीर साहब के कान में पड़ी। कहने लगे बहुत अच्छा। अब धर्मदास जी ने बहुतेरे यज्ञ किये, हवन किये तीर्थों पर, हर एक जगह, सारा रूपया खर्च कर दिया। तो बड़े-बड़े महात्मा आये, मगर वह महात्मा नहीं आये। आखरकार जब खाने को

कुछ नहीं रहा, चलो दरिया में डूब मरे, अब और क्या करें। दरिया पर गये तो वहां खड़े थे। महाराज मैंने सारा ही धन खर्च कर दिया। कहने लगे भई मैं उस वक्त आ जाता तो गुड़ पर मक्खियां बहुत इकट्ठी हो जाती। तो याद रखो किसी अनुभवी पुरूष के पास जाओ तो जबान पर काबू रखो। तो मैं यही अर्ज कर रहा था कि अनुभवी पुरूष किसी से बन्धा हुआ नहीं।

आं बुते अय्यार दर बर खुद ब खुद मी आयद। न बजारी बन बजारी न बजर मी आयद॥

जाओ, जो कुछ तुम समझते हो उसको जरा किनारे रख दो। वह तो तुम्हारा कोई छीन नहीं लेता। समझो वह किस Level से बात कर रहा है। हम क्या करते हैं, उसके Level से मिलाते रहते हैं। या इलमियत की छानबीन ही में, हां फलाने ने भी यह कहा है, यह कोई नई बात थोड़ी कहता है, फलाना भी यही कहता है, फलाना भी यही, अरे भई वही बातें तो कहता है, इसलिये पेश करता है कि तुम्हें समझ आये कि बात क्या है ? गवाही तब पेश करता है कि दो चारों की गवाही से काम आसान हो जाये समझाने का। अगला काम तो वही है ना जहां बुद्धि भी स्थिर हो। तो किसी अनुभवी पुरूष के पास जाओ तो पहला सवाल मन को खड़ा कर दो। मन के चार Phases मैंने बयान किये, चित्त, मन, बुद्धि और अहंकार ! समझो वह क्या कहता है। इसी लिये कहा —

मन बेचे सत्गुरू से पास। तिस सेवक के कारज रास॥

जब अष्टावक्र ने राजा जनक को ज्ञान दिया है, तो आपको पता है क्या मांगा है ? तन, धन, और मन। अरे भई तन, धन भी मन ही के आधार पर है। जहां मन गया वहां सब कुछ गया। तो कहते हैं क्या करो तुम ?

मन दीजे गुरू आपणें पाईये सरब प्यार।

कहते हैं फिर तुमको रौवें मिलेगी ना, आपको पता है वह महापुरूष क्या होता है ? स्वामीजी महाराज ने फरमाया है —

हे विद्या तू बड़ी अविद्या सन्तन की तै कदर न जानी।

कि हे विद्या, तू बड़ी अविद्या है। सन्तों के राज़ को नहीं जानती है। वह तो प्रेम के ठाठें मारते हुये समुन्दर होते हैं, प्रभु के, विश्व के। मगर तू तो अपनी बुद्धि पर उनको परखना चाहता है ? परख नहीं सकते। वह क्या होते हैं ?

सुभर भरे प्रेम रस रंग। उपज चाव साध के संग॥

वह प्रभु के प्रेम और रस और विश्व के प्रेम के Overflowing प्याले होते हैं। बुद्धि को किनारे रखो, देखो, Receptive बनो। यह बुद्धि के जो हैं चार Phases इस ही में न रहो। इसको थोड़ा सा किनारे करके समझो, तुमको रौवें मिलेंगी। तुम मायने न समझी उसकी जबान के, मगर उसका असर तुम पर पड़ता है।

मैं बरलिन (जर्मनी) में गया। वहां पर Talk मैंने दी। मैं जर्मन जबान नहीं जानता था। एक Interpreter (दुभाषिया) रखा। जो मैं अंग्रेजी में बोलता था वह जर्मन जबान में उनको तरजुमा करके सुनाता था। पाँच, दस, पन्द्रह मिनिट तो वह चुप रहे, फिर कहने लगे भई (उस तरजुमा करने वाले को) तुम मत बोलो। हम उसकी आंखों से ठीक समझ रहे हैं। मन बेचने का मतलब आप समझे ? यह नहीं कि बुद्धि को खो डालो, किनारे रखकर समझो, उस Level से समझने का यतन करो। अगर यह अपनी बीच में, मैं नहीं होगी ना, तो Right Import मिलेगी, Receptive होंगे तो जो उसकी धारा है, तुममें आयेगी। यह न हो कि —

मन दिया कहीं और ही, तन साधु के संग। कहें कबीर कोरी गज़ी कैसे लागे रंग ॥

यही स्वामीजी महाराज ने फरमाया है।

करो री कोई सत्संग आज बनाय।

तुम मायने भी न समझो, सिर्फ सामने Receptive रहो, वह धारा तुममें असर करेगी। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि सत्गुरू पूरा जब मिलेगा, तो आप को विचार का सही रतन Understanding का रतन जो है, अनमोल रतन वह मिलेगा। कैसे मिलेगा ? मन को थोड़ी देर के लिये खड़ा करना होगा। मन के Level से नहीं समझो, समझो वह क्या कहता है ? अपना जो पढ़ा-पढ़ाया है तुम उसको किनारे रख दो, मन को थोड़ी देर के लिये खड़ा कर लो, फिर परख लेना सब महापुरूषों की बाणी वही कहती है। यह न कहो कि वह कुछ और कहता है, वह कहता वही है जो सब महापुरूष कहते चले आये। कोई नई बात नहीं पेश करता। यह पुरातन से पुरातन और सनातन से सनातन है, मगर उसने अनुभव किया है। हम मन इन्द्रियों के घाट पर उसको अगर अपने Level से समझना चाहेंगे तो हार जायेंगे। तो कहते हैं, क्या नतीजा होगा ? ''सरब प्यार'' प्यार की रौयें तुममें ठाठें मारने लग जायेंगी। उभार मिलेगा ना ! उसकी आत्मा में प्रेम है। प्रेम की रौयें मिलेंगी। क्या नतीजा होगा ? मन खड़ा हो जायेगा।

जिस डिठिया मर रहसिये क्यों कर पाइये तिन संग जियो।

उनकी संगत हमको कैसे मिले ? समझे ! तो उस मण्डल में Charging होता है, Receptive खाली बैठ जाओ। पत्थर भी बर्फ में रहे, तो ठंडा हो जाता है। यह निशानी है महापुरूषों की। आलिमों की सोहबत में यह चीज़ नहीं मिलेगी। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं गुरू नानक साहब, कि सत्गुरू मिलेगा, तुमको Right Understanding का जो अनमोल रतन है वह मिलेगा। कब ? थोड़ा मन खड़ा करो, Receptive बनो, सत् की धारा उसमें बह रही है, तुमको भी असर करेगी। हजारों मीलों पर रहो तो असर करेगी। इसलिये कबीर साहब ने कहा, गुरू सात समुन्दरों के पार रहता हो, शिष्य इस तरफ रहता हो —

दीनी सुरत पठाय।

अगर रेडियो हजारों मीलों से आवाज़ को पकड़ सकता है तो हमारी सुरत उसको क्यों नहीं Receptive होगी ?

स्वामी विवेकानन्द जी के मुतल्लिक जिकर आता है। आपको पता है, बड़े आलम फ़ाजल (विद्वान) थे, मगर नास्तिक थे। लोगों को Challenge करते थे, कि है कोई जिसने प्रभु को देखा है ? तो उन दिनों श्री रामकृष्ण परमहंस कलकत्ते में थे। अनुभवी पुरूष थे, चाहे आलिम नहीं थे। देखो, इलम तो किताबों की मां है, समझे ! और ज्ञान सब की मां है ! तो वहां उसने ज्ञान को पाया है। इलम न भी हो तो क्या है ! तो वहां अमरीका में जब Parliament of religions हुई तो यह (विवेकानन्द) हिन्दु धर्म की तरफ से Representative मुकरर हुये। आपको पता है, अपने भाईयों में बैठकर कोई बात करो वह और बात है, जहां दुनियाँ के चीदा (चुने हुए) आदमी बैठे हों वहां बात करनी जरा मायने रखती है ! पांच, दस-पन्द्रह मिनट, Talk की। कुछ जरा Nonplus हुये कि आगे क्या कहें ? तो Talk करने वाले को थोड़ा यह होता है कि पानी मांगे या दूध मांगे, कुछ मांगे। उतनी देर वह चुप कर सकता है। तो उन्होंने पानी मांगा। ख्याल किया गुरू का। गुरू जिस्म (शरीर) नहीं होता है याद रखो। वह गुरू पावर है God Power जो इन्सानी पोल पर इजहार कर रही है। वह हरजाई (सर्वव्यापक) है। ध्यान किया। रौ आई, पानी आया। चल पड़ा। पांच, छह घन्टे लेक्चर देते रहे। लोगों को फिकर हो गया कि अगर कहीं यह रह गया तो सब मज़हब मलियामेट हो जायेंगे।

तो आप समझे ! विचार के रतन को पाने के लिये किसी सत्गुरू के पास जाओ। वहां पर थोड़ी देर के लिये मन को खड़ा करो। अपने आप तुम्हारे अन्तर रौयें मिलती है। एक आदमी, मुआफ करना, जो Receptive है वह तो नशे में जाता है देख देखकर, एक जो मन के, चित्त और मन-बुद्धि के अहंकार में है, उस स्करीनों (परदों) में छुपा पड़ा है, उसको वह देखता है, कुछ भी नहीं असर। यह फरक है।

अगर मिकनातीस पत्थर हो, उसके पास लोहा हो, लोहे पर थोड़ी मिट्टी लगी हो, फिर उसको खैंचेगा नहीं चाहे पास पड़ा रहे। मिट्टी न हो, लोहा इतनी दूर पड़ा हो फिर भी खैंचेगा। याद रखो मन Material (जड़) है, चेतन नहीं। इसका खासा (गुण) है ? इस पर Matter की मिट्टी लगी पड़ी है। वह मिकनातीसी पत्थर है, अनुभवी पुरूष। हमारी आत्मा भी उसी जाते-हक (प्रभु) की बून्द है, मगर मिट्टी से घिरी पड़ी है। इस मिट्टी को हटाओ, वह खिंच जायेगी। यह फरक है। किसी अनुभवी पुरूष के पास बैठने से, मन को ज़रा किनारे करके बैठ जाओ, देखो कितना रस मिलता है, कितनी मस्ती आती है, कितना आनंद मिलता है। प्रेम ठाठें मारने लग जायेगा। उसका कारण क्या है ? परमात्मा प्रेम है, आत्मा उसकी अंश है, यह भी

प्रेम का स्वरूप है। मगर यह प्रेम फैला पड़ा है मन इन्द्रियों के घाट पर। अगर इधर से थोड़ी देर के लिये हटे, एक जबरदस्त ताकत, रौ जो प्रेम की आ रही है, वह इसको खैंचेगी कि नहीं ? कायदे की बात है। हम यह बाणिंया पढ़ छोड़ते हैं, बड़े अनमोल रतन हैं महापुरूषों के, कभी खोलकर देखते नहीं बात क्या है।

मन दीजे गुरू अपणे पाइये सरब प्यार। मुक्ति पदार्थ पाइये अवगुण मेटण हार ॥

कहते हैं, सही नज़री के मिलने से, उस रौ के मिलने से, मन जो फैल रहा है ना, उसका इलाज हो जाता है, मलहम लग जाती है उस दिली तवज्जो से जो वह देता है। तो कहते हैं, आपको मुक्ति का पदार्थ मिल जाता है, उस परिपूर्ण परमात्मा की रौ के लगने ही से मुक्ति मिलेगी ना। नाम से मुक्ति कहते हैं कि नहीं ? नाम किसको कहते हैं ? परिपूर्ण परमात्मा का नाम जो सब खण्डों, ब्रह्मण्डों को आधार दे रहा है। कहते हैं कि तुम मुक्ति के पदार्थ को पा जाओगे। अब औगुण जो हैं, सब मिट जायेंगे। कब ? जब किसी Receptive के पास जाओगे। Receptive होकर बैठो किसी अनुभवी पुरूष के पास, खाली Receptive हो जाओ, बेशक तुम उसकी जुबान को न जानो, तुमको असर मिलेगा। अगर समझो तो और क्या कहना ! तो कहते हैं वह सब अवगुणों को मेटणें वाला है —

दर्शन भेटत पाप सब नासें।

यह गुरू अर्जुन साहब फ़रमाते हैं। दर्शन के भेटने से, मिलना और भेटना दो पन्जाबी लफ्ज़ हैं। मिलना तो मिलने को कहते हैं, भेटना कहते हैं दिल दिल की राह बने। तो भेटने का सवाल है। जब दिल दिल की राह बनें। खाली मिलने से नहीं। तो Receptive होने का सवाल है। क्राईस्ट ने बड़ा निर्णय किया है । महापुरूष इसी मजमून को समझाते रहते हैं। फरमाने लगे, एक अंगूर का पेड़ हो, मिसाल देते हैं, जो शाखें अंगूर के पेड़ में लगी रहेंगी, जुड़ी रहेंगी, वह तो फल लायेंगी, जो कट जायेगी, वह फल नहीं ला सकतीं। तो कहा I am the vines. मैं अंगूर का पेड़ हूं, तुम मेरी शाखें हो, जब तक तुम मुझमें जुड़े रहोगे फल लाओगे। इसका नाम है गुरू भक्ति। समझे ? जिसकी भक्ति होगी उसका कहना मानोगे। समझे ! If ye love me keep my commandments. अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो मेरा कहना मानो, क्राईस्ट कहता है। जहां प्यार है वहां इशारे पर इन्सान चलता है। वह क्या कहता है ? अरे भई Right Understanding यही है, न तुम तन हो, न मैं तन हूं। तुम आत्मा हो, मैं भी आत्मा हूं। जीवन आधार हमारा परमात्मा है, मेरी आत्मा उससे जुड़ी है। उनकी कृपा से तुम भी जोड़ लो। वह तुमको उसके साथ जोड़ता है। समझे ! वह God Power जो उसमें काम करती है, वह उसको Guide करती रहती है हर वक्त। थोड़ा अन्तरमुख हो, किसी को सच्चा दिल का विचार हो सही, वह Power तुम्हें Guide करती रहती है। आखर किसी न किसी महापुरूष के सामने ले आती है। वह उसको अन्तर जोड़ देता है। बस।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि तुमको मुक्ति का पदार्थ मिल जायेगा, सब अवगुण मिट जायेंगे। अवगुण यही है, बाहर फैलाव के ही अवगुण हैं, और क्या है ? मन को जब वह ऊंचा रस मिल गया फिर वह और तरफ क्यों जायेगा ?

भाई रे गुरू बिन ज्ञान न होये। भाई रे गुरू बिन ज्ञान न होये।

कहते हैं गुरू नानक साहब, भाई बगैर गुरू के ज्ञान का अनुभव नहीं होता। अब ज्ञान क्या है ? वह आगे बयान करेंगे कि ज्ञान किसको कहते हैं ? गवाहियां पेश करते हैं, किसकी ? आगे सुनिये।

भाई रे गुरू बिन ज्ञान न होये। पूछो ब्रह्मे नारदे वेद ब्यासे कोय।

श्रीमद् भागवद् पढ़ो। वहां ब्रह्मा का जिकर आता है कि उसने चारों वेद बनाये तो बड़ा उदास था। समझे ! आलिम, फाजिल, ग्रन्थाकार, पढ़ा लिखा, यह कोई जरूरी बात नहीं उस चीज को पाने की। कहते हैं नारद से जाकर पूछो, ब्यास के पुत्र सुखदेव मुनि से पूछो बगैर गुरू के यह चीज नहीं मिलती। गुरू किसको कहते हैं ? फिर वही सही नजरी का सवाल है। वह मन के घाट से ऊपर है। जब तक तुम मन देते नहीं, वह चीज मिलती नहीं। झगड़ा पाक। देने का मतलब और कुछ नहीं यह इसलिये कि स्थिर करो इसको, सुनो उसके Level से, वह क्या कहता है। जब यह (मन) खड़ा होगा तो वह रौवें आयेंगी। वह तो आगे ही आ रही हैं मुआफ करना। वह रौवें आ रही हैं, मण्डल में Charging है, जो Receptive हैं, वह उसका लुत्फ अपने अपने, दर्ज़े बदर्ज़े ले लेते हैं, पढ़ा, अनपढ़, सब ही। जब तक यह (मन) बीच से हटे ना, काम नहीं बनता। तो कहते हैं किसी को जाकर पूछ लो, बगैर गुरू के काम नहीं बनता। गुरू नानक साहब खुद फरमाते हैं।

बिन सत्गुरू किन्हे न पायो। बिन सत्गुरू किन्हें न पाया।

बड़ा साफ कर दिया। ज्ञान किसको कहते हैं ? अब सवाल यह रहा। आगे ज्ञान की तारीफ़ करेंगे।

ज्ञान ध्यान धुन जाणिये अकथ थहावे सोय।

कहते हैं ज्ञान और ध्यान जो है वह ध्वनि हो रही है जो, वह अकथ कथा हो रही है, ला-बयान है, जिसको उद्गीत कहते हैं, जिसको प्रणव की ध्वनि कहते हैं, जिसको नाद कहते हैं, उसके अनुभव करने का नाम ज्ञान है। पढ़ने लिखने का नाम ज्ञान नहीं है, आलिम-फाजिल होने का नाम ज्ञान नहीं, समझे ! जो इन्द्रियों के घाट से, मन के स्थिर होने पर अनुभव होता है, वह ज्ञान है। और गुरू की तारीफ क्या दी है ?

धुन आने गगन ते सो मेरा गुरू देव।

यह पलटू साहब तारीफ करते हैं , जो गगन ध्वनि को सुना दे, उसका नाम गुरू है,

प्रणव की ध्वनि का Contact दे दे। कब ? जब बाहर से हटोगे। वह थोड़ा Way-up करता है, रास्ता खोल देता है। जो महान ज्योति है — परमात्मा ज्योति स्वरूप है, घट घट में है, वह (गुरू) बाहर से हटाकर उनका थोड़ा अनुभव दे देता है, समझे !

मेरे गुरू देवो मोको राम नाम परगास।

यह है राम नाम को प्रगट करो भई, ज्योति को। यही स्वामीजी महाराज ने फरमाया है। वह कहते हैं, घट में भानु का उजियारा करो, सूरज की रोशनी दिखलाओ। यही गायत्री मंत्र में आता है एक जगह। भृगो का लफ़्ज़ आता है कि नहीं। अन्तर में रोशनी सूरज की है, Light of God है, उसकी तरफ हे प्रभु हमें ले चल। जिसने देखा है वही दिखा सकता है। जो दिखा सकता है, उसका अनुभव करा सकता है, उस प्रणव की ध्वनि का, उसी का नाम गुरू है। जाओ भई, ढूंढलो जहां से मिलता है। कहते हैं इस ज्ञान का अनुभव बगैर गुरू के नहीं होता। क्यों ? आप समझ रहे हो ? क्योंकि हम इन्द्रियों के घाट पर घिरे पड़े हैं, जिसम का रूप बने बैठे हैं, अपने आपको भूल चुके हैं। बच्चा है छोटा, उससे पूछो तुम कौन हो ? वह आंखें फड़ता है, मुंह खोलता है। उसको अभी कुछ होश बाकी है कि मैं यहां हूं। जैसे-जैसे बड़ा होता है, पूछो तुम कौन हो ? मैं रामदास, मैं रामसिंह, मैं मिस्टर खान हूं। बस। यह अनुभव भी नहीं रहता है। तो उसके पाने के लिये, कहते हैं, बगैर गुरू के यह चीज नहीं मिलेगी। यहां तक आया है कि —

जे सौ चन्दा उगवें सूरज चढ़ें हजार।

जो सौ चान्द चढ़ जायें, हजार सूरज चढ़ जायें —

एते चानण होंदिया गुरू बिन घोर अन्धार।

अन्तर की आंख न खुले तो वह नजर कैसे आये ? वह दिव्य चक्षु जिसको कहते हैं, शिव नेत्र कहते हैं, Third eye, Single eye कहते हैं, If thine eye be single thy whole being shall be full of light. वह आंख खुले, अन्तर ज्योति का विकास होता है।

दस इन्द्रे कर राखे वास तां के आत्मे होय प्रगास

इन्द्रियों से कैसे उलटना, यह सत्गुरू बतलाता है। बाहिर का जितना इल्म है, वह इन्द्रियों के घाट के फैलाव से ताल्लुक रखता है। जो ज्ञान का मजमून है, यह इन्द्रियों के घाट से उलटकर मिलता है। उसकी क, ख, वहां से शुरू होती है। Where the world's philosophies end, there the religion starts. जहां दुनियाँ के फिलसफे खत्म हो जाते हैं वहां से परमार्थ की क, ख, शुरू होती है। तो सत्गुरू मिलने से क्या होता है ? रतन विचार का मिलता है। कैसे मिलता है ? ज्ञान का अनुभव होता है। कैसे होता है ?

सत्गुरू मिलिये उलटी भई भाई।

इन्द्रियें उलटने लगती हैं। How to invert अब तो फैलाव में जा रही है ना। फैलाव के जितने मजमून हैं, बड़े आसानी से समझ आयेंगे। उसमें भी, मुआफ करना, हम किसी न किसी की हिदायत लेते हैं, मदद लेना चाहते हैं। अरे भई ऐसा इलम जो इन्द्रियों को उलट कर मिलता है, वह बगैर किसी की मदद के कैसे होगा ? तो जब सत्स्वरूप हस्ती मिलती है, तुमको वह इन्द्रियां उलटना सिखलाता है, How to invert ? (कैसे अन्तरमुख हों ?) थोड़ा इसका अनुभव देता है, उसको रोज-रोज बढ़ाओ -

जीवत मरे तां बूझ पाई।

सुरत फैलाव से हटकर अन्तरमुख होगी जिसम बेहिस (अचेत) हो जायेगा, तुम देखने वाले बन जाओगे। तुम इकरार करोगे हां मुझे कुछ मिला है। अष्टावक्र ने पूछा है राजा जनक को, (जब तीनों चीजें दे चुका), क्यों भई ज्ञान हुआ ? कहते हैं हां हुआ। लेने वाला कहे मुझे कुछ मिला है। थोड़ा सही, थोड़ा भी मिले तब कोई बात है ना। तो यह अनुभव का मजमून है। आप देखिये इन्द्रियों के घाट का सवाल नहीं, यह ऊपर का है, Transport कह दो अंग्रेजी में, आत्मा अनुभव करती है, इन्द्रियों का घाट नहीं। जैसे-जैसे, स्थूल इन्द्रियों, सूक्षम इन्द्रियों, कारण इन्द्रियों से तुम ऊपर आते हो, वह अनुभव बढ़ता चला जाता है। आखर यह देखता है, सोहंग, मैं और मेरा पिता एक हैं। I and my Father are one. वह मुझमें काम कर रहा है।

जैसे में आवे खसम की बाणी तैसा करी ज्ञान वे लालो।

यह है। इसका नाम है ज्ञान। हम क्या समझते हैं ? जो कथा सुना दे, लेक्चर सुना दे, तफसीरें और एक-एक के कई-कई मायने सुना दे, इसका नाम सत्संग नहीं।

ज्ञान ध्यान धुन जाणिये अकथ कहावे सोय। सफलियो बृख हरियावला छांव घणेरी होय॥

कहते हैं गुरू एक बड़ा सायादार दरख्त है। समझे ! जिसमें तरो ताज़ा पत्ते हैं और महकदार फूल, खुशबू दे रहे हैं, उसकी बड़ी छाया है, जो उसमें जाते हैं, ठण्डक को पा जाते हैं। सब महापुरूषों ने यही बयान किया है। मौलाना रूम साहब फरमाते हैं।

दिला नज़दे कसे बिनशीं के ऊ अज़ दिल खबर दारद।

ऐ दिल तू किसी ऐसे की नजदीकी में बैठना सीख कि जिसको हमारे दिल की खबर हो, मन की खबर हो, कि किस हालत में हम जा रहे हैं। कहते हैं कैसे होगा ?

बज़ेरे आं दरख्ते रो बरो गुलहाय तर दारद।

किसी ऐसे दरख्त के नीचे बैठो जिस पर तरो ताजा फूल महक रहे हों। समझे !

दरीं बाजारे अत्तारां मरो हरसू चो बेकारां । बदकाने कसे बिनशीं के दरो अगंबी दारद ॥

दुनियाँ में बेकारों की तरह न फिरो, किसी ऐसे की दुकान पर बैठो, जिस में शहद हो शहद । फिर आगे थोड़ी ताकीद करते हैं, कि दुनियाँ में प्रचार बड़े हो रहे हैं ।

कस न गोयद कि देगे मन तुरशद ।

कोई नहीं कहता कि मेरी छाछ खट्टी है । सब कहते हैं, जा बच्चा तेरी कल्याण हो गई, पहुंच गया, तेरा सच खण्ड का टिकट रिजर्व हो गया । अरे भई जीवन वैसा ही है, यह तो जीवन का सवाल है भई, तो कहते हैं ।

बहर देगे के मे जोशद मयावर कासाओ बिनशीं ।

कि देग बड़े उबल रहे हैं, बड़े प्रचार हो रहे हैं, जहां भी देखो वहां प्याले लेकर न बैठ जाओ भई, थोड़ा विचार से काम लो ।

के हर देगे के मे ज़ोशद दरो चीज़े अंगबो दारद ।

हो सकता है कि वहां खुद गर्जिया ही उबल रही हों, Money making हो रही हो, व्यापार हो रहा हो । Black Marketing बाहिर दुनियाँ में भी बहुत है, मगर परमार्थ में उससे भी ज्यादा हो रही हैं, मुआफ करना । सच्ची बात है । व्यापार बन रहा है । क्राईस्ट गया चरचों (गिरजों) में । कहने लगा निकल जाओ यहां से, तुमने मेरे पिता के घर को Business Home (दुकान) बना रखा है, निकल जाओ यहां से । अनुभवी पुरूष का सवाल है । बुल्लेशाह ने फरमाया है कि —

धर्मशाले धड़वाई रैहदें ते ठाकुर द्वारे ठग । मसीता बिच कसबी रहदें आशक रहन अलग ॥

यह अधोगति को बयान किया है जिसको हम पा चुके हैं । समाजे बनाई गई थीं, वहां पण्डित उसको होना चाहिये था जो अनुभवी हो । वह बिचारा नौकर है, दस, बीस, पचास रूपये का, इसी तरह भाईयों (गुरूद्वारे के उपदेशकों) का हाल है, इसी तरह मुल्ला का हाल है, इसी तरह पादरियों का हाल है । वह उससे (वेतन देने की इच्छा से) उलट कर नहीं सकता, करे तो निकाले जाते हैं । फिर ! उन लोगों से बिचारों से क्या मिलेगा ? Corrupt हो गई ना वही चीजें ? बड़े Noble (ऊंचे) भाव से बनाई गई थीं, क्योंकि वह Upto the mark नहीं, वह कहते हैं, पूजा में पैसे चढ़ाओ, फूल चढ़ाओ, चलो जाओ तुम्हारी कल्याण है । परशाद लेलो, चलो खत्म हुई बात । वह हालत बन गई, The same good old custom corrupts itself. वही चीजें जो Noble Purpose से बनाई जाती हैं, वह साधन या तारीके या रस्मों रिवाज इसको आजाद करने के लिये बनाये गये थे, वही पांव की जंजीर बन जाते हैं, हाथों की हथकड़ियां बन जाती हैं । कोई एक समाज का आदमी दूसरी समाज में जाने से डरता है । यह गलत प्रचार का नतीजा है ।

हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) थे। फ़रमाते थे, यह चीज है भई, तुमको दी गई है। जाओ जहां मर्जी है। इससे अच्छी चीज़ मिले, तुम भी लो, मुझे भी कहना, मैं भी जाऊंगा। हम तो भई सच्चाई के पुजारी हैं ना। जहां से मिले लेलो। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, **''सफलियो बृक्ष हरियावला छांव घनेरी होव''**।

लाल जवाहर माणकी गुरू भण्डारे सोय।

गुरू के भण्डार में अनमोल रतन मिलते हैं, उसके साये के नीचे जा बैठो, धूप में झुलसा हुआ इन्सान जब किसी सायादार दरख्त के नीचे बैठता है, होश आ जाती है थोड़ी देर के लिये। जब किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में बैठो थोड़ी देर के लिये होश आ जाती है। भई बात क्या है, बात तो कुछ नहीं !

साध के संग बुझे प्रभ नेंरा।

तो प्रभु बड़ा नजदीक भासता है। जब बाहर निकल जाओ फिर वही हाल है। तो कहते हैं गुरू के भण्डार से यह चीज़ मिलती है, अनमोल रतन मिलते हैं, नाम का रतन, विचार Right Understanding का रतन, यह उसके चरणों में मिलते हैं। उसके साये में चल बैठो, वह ठण्डक देता है।

गुरू भण्ढारे पाइये निर्मल नाम प्यार।

ऊपर ज़िकर किया था कि, ''लाल जवाहर माणकी गुर भण्ढारे सोय'' गुरू के भण्डार से बड़े अनमोल रतन मिलते हैं। किस चीज के ? आगे उसी को बयान करते हैं। गुरूबाणी में यही फजीहत (बड़ाई) है कि एक तुक में जो चीज बयान की, दूसरी में बड़ा खोलकर उसको बयान कर देते हैं ताकि कोई गलती न रहे समझने में। तो कहते हैं गुरू के भण्डार में वह कौनसा लाल और जवाहर मिलता है ? कहते हैं, ''पाइये निर्मल नाम प्यार।'' निर्मल नाम करके बयान किया है। इसका मतलब यह है कि ऐसे नाम भी हैं जो निर्मल नहीं है। नाम किसको कहते हैं ? परमात्मा अनाम है। उसका कोई नाम नहीं Absolute God है ! जब वह इजहार में आया (प्रगट हुआ) तो, ''एको बहुश्याम, मैं एक हूं अनेक हो जाऊं।'' और ''एको कवाओ तिस ते होय लख दरयाओ'' (गुरूबाणी), ''कुन फ़ियुकुन'' (कुरान शरीफ), जो इजहार में आई ताकत है उसको नाम कहते हैं सन्तों की इस्तलाह (परिभाषा) में —

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

उसके फिर नाम ऋषियों, मुनियों महात्माओं ने रखे, किसी ने राम कहा, किसी ने अल्लाह कहा किसी ने खुदा कहा। अब यह अक्षरी, नाम हैं। निर्मल नाम वह Power (ताकत) है, जिसके यह नाम हैं। बस। कहते हैं उसके भण्डार में वह जो निर्मल नाम है, उसका Contact (परिचय) मिलता है। अक्षरी नाम तो कोई भी बतला देता है, जाओ भई राम राम कहो, वाहगुरू कहो। इसका यह मतलब नहीं कि उनकी (अक्षरी नामों की)

ज़रूरत नहीं। इन सब नामों की भी हमारे दिल में इज्जत है —

बलिहार जाऊं जेते नाव हैं।

हे प्रभु ! जितने भी नाम तेरे रक्खे गये, हम सब पर कुरबान हैं। अब सवाल आता है —

कौन नाम जग जाके सिमरे, भव सागर को तरिये।

वह कौन सा नाम है भई जिसके सुमिरन करने से भवसागर से पार होता है ? अब जिनको गुरू नहीं मिला, वह अक्षरी नामों ही को सब कुछ समझ रहे हैं। हिन्दु भाई कहते हैं भई वह ओम है या राम है, मुसलमान कहते हैं वह अल्लाह हू है, सिख कहते हैं वह वाहगुरू है। कौनसा सही हुआ भई ? वह कहते हैं इसी नाम से गति है, वह (दूसरे) कहते हैं इसी नाम से गति है ! अरे यह अक्षरी नाम हैं। वह Power जो नाम असल में है, उसकी बोधो। वह असल नाम है जिससे जीवन का उद्धार है।

पानी है। उसको जल कहो, नीर कहो, आब कहो, Water कहो। यह अक्षरी नाम हैं। पानी से प्यास बुझती है, अक्षरी नामों से चलकर जिसके यह नाम हैं, उसके पीने से। बात तो यही है। फिर और कहा, फिर सवाल करते हैं। महापुरूष बड़ा खोल खोलकर मजमून को बयान करते हैं। कहते हैं —

कौन नाम जग जाके सुमिरे, पाये पद निरबाना।

निर्वान पद की प्राप्ति, वह कौन सा नाम है जिससे होती है। निर्वान पद किसे कहते हैं ? जो तृगुण अतीत अवस्था में हो। और जितने अक्षरी नाम हैं सब तीन गुणों के अन्तर हैं। फिर ? फिर वह कहते हैं, ''नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड'' वह असल में सच्चा नाम है। सच्चा नाम कहो, निर्मल नाम कहो। तो कहते हैं गुरू के भण्डार से इसका Contact मिलता है। अक्षरी नामों का तो हर एक जगह से मिल जायेगा। यह नाम कहां है ?

नौ निधि अमृत प्रभु का नाम। देही में इसका बिसराम ॥

हर एक किसम की खुशी के देने वाला प्रभु का जो नाम है, तुम्हारी देह के अन्तर Contact है उस Divine Link का। उसी के आधार पर तुम्हारी आत्मा इस जिसम के साथ कायम है। खण्ड, ब्रह्मण्ड उसी के आधार पर चल रहे हैं। वह तुम्हारे अन्तर है। तो फिर सवाल आता है, अन्तर कहां है ?

अदृष्ट, अगोचर नाम अपारा। अति रस मीठा नाम प्यारा ॥

बाहर की दृष्टि का यह मजमून नहीं। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना पड़ेगा। बड़ा मीठा बड़ा प्यारा नाम है। तो कहते हैं गुरू के भण्डार से यह नाम मिलता है। अक्षरी नाम तो कोई भी बता सकता है, बाहर के जन्तर मन्तर भी कोई भाई बतला सकता है, पूजा पाठ भी सब कोई सिखला सकता है। मैं तो यह अर्ज करूंगा कि अगर सामाजिक गुरू भी सही प्रचार

करें, सबका आपस में प्यार हो जाये। हर एक समाज के सामने आदर्श क्या है ? प्रभु से प्यार करो। प्रभु सब में है, सबसे प्यार करो। फिर, झगड़े क्यो हैं ? वही है, Different Levels के झगड़े हैं, मन के Level से, बुद्धि, यह वह से, Feelings में Emotions में या Inferences निकालते हैं, सही नज़री है नहीं, इसलिये झगड़ते हैं, और ऐसे पुरूष हमेशा ही, याद रखो अनुभवी पुरूषों की मुखालिफत (विरोध) करते रहे। जितने मुखालिफत करने वाले थे वह पढ़े लिखे, पण्डित थे, कोई ऐसे वैसे नहीं, मगर थे मन के Level से। गुरू नानक साहब जैसी हस्ती को कहा यह कुराहिया है। लोगों की अकलें बिगाड़ता है। और कसूर शहर में दाखिल नहीं होने दिया। कई भाई कहते हैं मेरे मुतल्लिक कि यह काल का रूप है, इसकी शकल न देखो, नहीं तो गुमराह (पथभ्रष्ट) हो जाओगे। भई देख लो, जो बात है तुम्हारे सामने है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं गुरू नानक साहब —

साचा वखर संचिये पूरे कर्म अपार।

ठीक है, ग्रन्थों, पोथियों की ज़रूरत है। समझना है एक बात को। यह बाणी क्यों पेश की जाती है आपको बार बार ? सब महापुरूष यही कहते हैं। कहते हैं। अगर कोई सचमुच अनुभवी पुरूष तुमको मिल जाये, ग्रन्थों पोथियों में जो चीज है (वर्णन रूप में) उसको उसने पाया है, ग्रन्थ पोथियों की, किसी की जरूरत नहीं रहती, सबको किनारे रख दो। आपको पता है स्वामी दयानन्दजी को विरजानन्द जी ने क्या कहा ? ''जो चीज़ मैं तुमको देना चाहता हूं वह इन किताबों में नहीं मिलेगी। इन किताबों को जमुना में फेंक आओ।'' बुल्ले शाह थे। जब उनको शाह इनायत के पास जाकर हकीकत मिली, क्या किया ? किताबों का जो ढेर — बड़े आलम (विद्वान) थे, ढेर लगाकर किताबों के आप ऊपर बैठ गये। लोगों ने देखा बड़ा फकीर आदमी है यह, बड़ी बेअदबी (निरादरी) हो रही है किताबों की। तो वह समझाने को आये। काजी साहब आये तो दूर ही से — यह लोग दूसरे के दिल का ख्याल जान लेते हैं — कहने लगे, अरे भई पहले मेरा फैसला करो, काजियो ! वह कहने लगे, हम आपको कुछ बात कहने आये हैं। कहने लगे, पहले मेरी बात करो, पीछे तुम्हारी सुनूगा। कहने लगे, कहो, क्या कहते हो ? कहने लगे, एक दोस्त हो ऐसे, जो कहे मैं आज देता हूं, कल देता हूं। शौक तो बढ़ाये, दे न चीज। उसका क्या करना चाहिये ? कहने लगे उसकी अधोगति करो। तो कहने लगे (बुल्ले शाह) यह वही किताबें हैं जो सारी उमर पढ़ता रहा। इनमें जिकर तो बड़े अच्छे आते हैं, सब कुछ है, मगर यह किताबें दे नहीं सकीं (चीज) मिली कब, जब शाह इनायत के पास गया। राज़ (भेद) की बात तो यही है। इससे किसी तरह ग्रन्थों पोथियों की कीमत घटती नहीं भई। यह अनमोल रतन है, हीरे जवाहारात से भी ज्यादा कीमती हैं, उन महापुरूषों के, जिनको देखकर हमारे दिल में शौक बढ़ता है, उन्होंने पाया है, सबने पाया है, हम भी पायें। अब भी किसी ऐसे अनुभवी पुरूष की जरूरत है जो उस रस्ते जा रहा है, हमको उधर ले जा सकता है। पढ़ने से खाली काम न हुआ न हो सकता है।

भवजल बिखम डरावनों न कन्धी न पार। न बेड़ी, न तुलहड़ा, न तिस वंज मलार।

कहते हैं संसार सागर एक बड़ा खौफ़नाक (भयानक) समुन्द्र है। इसकी क्या गति है ? न कोई आर नजर आता है न पार। क्या किनारा है, किसी को कुछ नज़र नहीं आ सकता। और साथ क्या है ? न कोई बेड़ी है, न कोई तुलहा है न कोई मल्लाह (खेवट) है। किस सहारे जा सकते हैं ? हमारे पास तो सहारा मन का है ना — चित्त, मन, बुद्धि और अहंकार। यह सब उससे दूर रखने वाली चीज़ें हैं। इनसे समझने के लिये तो ठीक है — Reasoning is the help मगर इससे आप पा नहीं सकते। कहते हैं अब करें क्या ? संसार सागर है, कोई उपाय है इससे पार जाने का ? आगे जवाब देते हैं —

सत्गुरू भय का बोहिथा नदरी पार उतार।

कहते हैं सत्गुरू एक ज़हाज है भई नज़र करके तुमको चढ़ाता है और पार ले जाता है। कहते हैं वह जहाज़ किस चीज़ का है ? नाम का। नाम के साथ Contact देता है। देखो ना मुक्ति का साधन नाम है। नाम की महिमा आपने रामायण में पढ़ी है, बालकाण्ड में ?

अगुण सगुण दोऊ ब्रह्म सरूपा।

निर्गुण और सगुण दोनों ही ब्रह्म के स्वरूप हैं। अगाध, अनूपा, बखान करके आखिर कहते हैं —

मेरे मत नाम दोऊ ते ऊंचा।

मेरे मत में नाम दोनों से बढ़कर है। समझे। वह तो बयान में आ ही नहीं सकती ताकत।

कहूं कहा लग नाम बड़ाई। राम न सकत नाम गुण गाई॥

राम और नाम का मुकाबला किया है। नाम को अधिक बतलाया है, कहते हैं उसकी महिमा राम भी नहीं गा सकते, क्योंकि लाबयान (वर्णन से परे) जो है, उसको कैसे बयान में ला सकते हैं ? गुरू बाणी में आया है —

नानक कागज लख मनां पढ पढ कीजे भाव।

लाखों मन कागज भाव भक्ति के साथ — मेरे ख्याल में सारी दुनियाँ की धर्म पुस्तकें सौ मन होंगी, कहते हैं लाखों मन, भाव भक्ति से पढ़ डालो। कहते हैं और भी —

मस्सू तोट न आवई लेखे पवन चलाव।

कि स्याही की कमी न हो और हवा की तरह और भाव भक्ति से तुम लिखते ही चले जाओ।

भी तेरी कीमत न पावे हौं केवड आखां नाव।

कहते हैं नाम फिर भी बयान में नहीं आ सकता। नाम, नाम है भई !

नाम नाम सब कहत हैं नाम न पाया कोय। नाम न पाया कोय नाम की गति है न्यारी ॥

नाम नाम तो सारा जहान करता है, कि मैं नाम जप रहा हूं, अरे नाम के राज़ (भेद) समझना हो तो किसी अनुभवी पुरूष के पास जाओ। वह निर्मल नाम है, वह सच्चा नाम है, यह अक्षरी नाम हैं। वह कहां मिलेगा ? जो उस नाम के दाता का भण्डार है। किसके पास है ? गुरू को सच्चा बादशाह कहा है। उसके पास सच की दौलत है। बाकी सब फ़ना की (नाशवान) दौलतें हैं।

इक तिल प्यारा वीसरे दुख लागै सुख जाये।

अब गुरू नानक साहब कहते हैं, एक तिल मात्र भी हम उसको भूल जायें तो दुख आ जाये, सुख जाता रहे। दुखी हम क्यों हैं ?

नानक दुखिया सब संसार। सो सुखिया जिस नाम आधार ॥

वह हमारा जीवन आधार है। उस तरफ मुंह करो सुख, उससे दूर जाओ दुख। सारे महापुरूषों ने यही कहा है। स्वामीजी महाराज फ़रमाते हैं —

सुरत तू दुखी रहे हम जानी।

कि ए सुरत तू दुखी है, हम जान रहे हैं। कब से ?

जा दिन ते तू शब्द विसारा, मन संग यारी ठानी।

जब तू उस परिपूर्ण परमात्मा से दूर हो गई, मन के घाट उतर गई, उस दिन से। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। कहते हैं, ''इक तिल प्यारा वीसरे दुख लागै सुख जाये।''

जिहवा जलौ जलावनी नाम न जपै वसाये।

कहते हैं वह जिहवा जल जानी चाहिये, जो उसके नाम का रस नहीं ले रही। वह जिहवा जल जाने के काबिल है। फिर यहां तक बयान किया है, उस जिहवा को तिल तिल काट देना चाहिये जो नाम न जपे। उसका शुकराना है। वह हमारा जीवन आधार है भई ! उस तरफ हम तवज्जो नहीं दे रहे।

दात प्यारी विसरिया दातारा। जाने नाहीं मन विचारा ॥

आखिर जाना है भई। मनुष्य जीवन भागों से मिला है। उसका (प्रभु का) अनुभव करना था। उसको पा गये तब तो ठीक। कहते हैं ज़बान से उसका शुकराना करो। जो जिहवा उसका शुकराना नहीं करती वह जिहवा जला देने के काबिल है।

घट बिनसे दुख अगलो जब पकड़ें पछताये।

कहते हैं यह काम तुम मनुष्य जीवन पाकर नहीं करोगे, यह जिसम आख़र बिनस जायेगा, दुख बढ़ जायेगा, यमों के हवाले होगे, जैसा बीज बीजोगे वैसा काटोगे, चक्कर

खाओगे। अगर तुम इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गये, नाम के रस को पा गये, आना जाना खत्म हो गया। अगर इन्द्रियों के घाट ही पर रहे, खाहे नेक कर्म किये, खाहे बद (बुरे) किये, आना जाना बना रहेगा। बस। यह दौलत ऊपर की, जो इन्द्रियों के घाट से अतीत है, मिलती है गुरू के भण्डार से। ऐसा गुरू मिलता कहां है ? राजा जनक को एक मिला था, सारे हिन्दुस्तान भर में। जितने ज्यादा हों खुशी की बात है। अष्टावक्र मिला, एक, राजा जनक को। सुखदेव को एक, जनक, मिला। फिर ! इस बात का सवाल नहीं जंगल में रहता है या शहर में रहता है ? कोई फरक नहीं। अनुभव को जो पा गया है।

पूरा सत्गुर भेटियये पूरी होवे जुगत।
हसन्देयां, खेलन्देयां, खवेन्देयां, पहनन्देयां विच्चे होवें मुक्त।

तुमको घर बार छोड़ने की हिदायत नहीं देता। वह कहता है चौबीस घन्टे हैं, दो चार घंटे इधर भी दो। यह भी काम हो। दोनों हाथ लड्डू रहें। बात तो यह है। अनुभवी पुरूष घर बार छोड़ने की हिदायत नहीं देता। वह कहता है अपने पाँव पर खड़े हो।

खट घाल किछ हत्थों दे। नानक राह पछाने से ॥

गुरू की भी तारीफ यही की है —

गुरू पीर सदाये, मंगन जाये। ताके मूल न लागो पाये ॥

लोगों ने Business बना रखा है, लाखों, करोड़ों रूपये जमा कर रहे हैं। चीज़ और थी बन कुछ और रही है। Blind leads the blind, अन्धा अन्धे को चला रहा है। नतीजा क्या है ? लोग Gurudom के नाम से मतनफर (नफ़रत) हो रहे हैं, अरे भई क्या है, हमें तो किताब ही अच्छी है। मगर सच्चे महात्मा के बगैर गति है नहीं भई। न हुई और न हो सकती है।

मेरी मेरी कर गये तन धन चलत न साथ।

कहते हैं सारा जहान यह मेरा, यह मेरा, यह मेरा। न धन गया, न बच्चे गये, न स्त्री साथ गई। बस इसी में सुरत सारी उमर गरक रही, यह कह दो, इसी में बसी रही, इसी में लम्पट रही। यह शरीर था हमारा संगी और साथी दुनियाँ में आते हुये, जाते हुये यह भी साथ नहीं जाता। जो इसके सबब से बने हैं वह कैसे साथ जायेंगे ? बड़ी मोटी बात है। अरे भई तुम मेरी मेरी क्या कर रहे हो, यह सब छोड़ जायेगे।

बिन नावें धन बाद है भूलो मार्ग हाथ।

तो फरमाते हैं कि, ''बिन नावें धन बाद है भूलो मार्ग हाथ।'' माया, इस भूल में तुम जा रहे हो, बाद में कहते हैं माया कहां से शुरू होती है ?

यह शरीर मूल है माया।

यहां से। हम तन के धारण करने वाले हैं, तन का रूप बन गये। अब आत्मा के Level

से नहीं देखते। तन के Level से सब भूल में जा रहे हैं। पढ़े लिखे, अनपढ़, अमीर, गरीब सब भूल में जा रहे हैं। तन Matter (जड़ प्रकृति) का बना हुआ है। जगत Matter का बना हुआ है। यह सब बदल रहे हैं एक ही रफतार से। जो इसका रूप बना बैठा है, उसको मालूम होता है यह स्थिर है। हालांके आत्मा सत्य है और जगत असत्य है, बदल रहा है। सब गलती में जा रहे हैं। कहते हैं यह सारा सिलसिला ही, बगैर नाम के सारी दुनियाँ ही भूल में जा रही है, माया में भूल रही है। माया दो किसम की है। एक जड़ माया, एक चेतन माया। इसमें हम बहे चले जाते हैं। कोई महापुरूष मिले, इससे हमें ऊपर लाये, आँख खोले, तब रस्ता मिले, नहीं तो आलिम होना, फ़ाज़िल होना, अनपढ़ होना, कोई फरक नहीं पड़ता है। मुआफ करना, आलिम से बेइलम फिर ज्यादा अच्छा है । क्योंकि वह जल्दी चल सकता है। समझे ! उसको यह कहने की जरूरत नहीं पड़ती। वह कहता है चढ़ो, वह चढ़ने लग जाता है। पढ़ा लिखा कहेगा मैं क्यों चढ़ूं भई ? कितनी पौड़िया (सीढ़िया) हैं, कहीं गिर तो नहीं जांऊगा ? वह इसी विचारों में रह जाता है। तो जो पढ़कर, समझकर, चलता है, फिर क्या कहना ! वह एक चीज़ को पाकर हजारों का आधार बन जाता है। इल्म अपने आप में बड़ी अच्छी चीज़ है, आमिल के गले में फूलों का हार है और बेअमल के सिर पर गधे का बोझा है।

साचा साहेब सेविये गुरूमुख अकथो कथ।

कहते हैं उस सच्चे साहिब के सेवने वाले बनो जो अटल और लाफ़ानी है। कहते हैं कौन उसकी कथ सकेगा ? कोई गुरूमुख ! गुरूमुख किसको कहते हैं ? ''जो गुरू सेती सन्मुख हो।'' जो किसी अनुभवी पुरूष के सन्मुख बैठा है। बस ! दूसरा उसकी नहीं कथ सकेगा। वह सिर्फ अपनी मन बुद्धि के बिचारों में रहेगा, इसलिये एक फकीर ने कहा कि —

ऐ खुदा जोयां, खुदा गुम करदई।

ऐ खुदा को ढूंढने वालों, गुम कर दिया है तुमने उसको। किस जगह ?

गुम दरी अमवाजे कुलजम करदई ॥

मन रूपी समुद्र की लहरों में गुमकर लिया है, बुद्धि के विचारों में, यह वह में। जब तक सही नजरी नहीं मिलेगी, काम नहीं बनेगा। जाओ किसी सन्त के पास, सच्चे विचार को पाने के लिये।

आवे जाये भावांइये पाइये किरत कमाये। पूरब लिखिया क्यों मेटिये, लिखिया लेख रजाये ॥

याने अपने कर्मों के अनुसार इनसान का पूरब लिखा लेख है। जैसा लिखा जाता है, वह सब भोगना पड़ता है। जिस की मोहब्बत दुनियाँ से है वह बार बार दुनियाँ में आयेगा, नेक कर्म करेगा तो सुख पायेगा, बुरे कर्म करेगा तो दुख उठायेगा। ''नरक स्वर्ग फिर फिर औतार।'' हां इन्द्रियों के घाट पर ही सब कर्मों का ताल्लुक है, अगर आप इन्द्रियों के घाट

से ऊपर हो जाओ, Conscious Co-worker of the Divine Plan बन जाओ, ज्ञान का अनुभव पा जाओ, नेह कर्म हो गये, आना जाना खत्म हो गया। हम बार बार दुनियाँ में क्यों आ रहे हैं ? हमारा दुनियाँ से प्यार है। प्रभु को भी अगर थोड़ा बहुता याद करते हैं तो इसलिये कि दुनियाँ की चीजें मिले। प्रभु के पाने के लिये तो नहीं ? तो अनुभवी पुरूष तुमको सही नज़री देता है, Right Understanding, यह है भई। हर एक चीज की अपनी-अपनी कीमत है, उससे फायदा उठा लो। मगर मुक्ति का कारण आना जाना खत्म करना है, तो उसका अनुभव पावो। वह तभी होगा जब तुम्हारी आत्मा मन इन्द्रियों से आजाद हो, तब उसका अनुभव करेगी।

बिना हरि नाम न छूटिये गुरू मत मिले मिलाये।

कि हरि नाम के पाने के बगैर तुम्हारा छुटकारा नहीं है। हरि नाम किस को कहते हैं ? तारीफ की है सन्तों ने,

हर हर उत्तम नाम है जिस सिरजयां सब कोय।

जिसने सारे संसार को पैदा किया है, उसका नाम हरि नाम है। तो कहते हैं, उसके बगैर तुम्हारा छुटकारा नहीं है। कैसे मिलेगा ? गुरूमत करके मिलेगा। गुरूमत का मोहताज है। है तुम्हारे अन्तर। क्यों हम नहीं पा सकते ? हमारी आत्मा मन इन्द्रियों के आधीन होने के सबब से इस जिसम का रूप बनी बैठी है। जितने साधन हैं, पढ़ना, लिखना, विचारना, पूजा पाठ, रस्म-रिवाज, तीर्थ-यात्रा, इन सबका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। यह सब अपरा विद्या है। जो इन्द्रियों के घाट का आगे रूप बना बैठा है, साधन वह करता है जिनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है, वह इन्द्रियों के घाट से कैसे ऊपर आ सकता है ? ठंडे दिल से विचारो। अगर कोई जा सकता है, बड़ी खुशी की बात है। जाये। अगर न जा सके तो किसी की मदद ले लो। तो कहते हैं, बगैर नाम के — ''बिन हर नाम न छुटिये गुरूमत मिले मिलाये।'' यह गुरूमत का मुहताज है। जो अनुभवी पुरूष आपको अनुभव दे, Life से Life आयेगी। समझे। जलते हुये दीये से दूसरा दीया जग उठेगा। बात तो यह है।

तिस बिन मेरा को नहीं जिस का जीव प्राण।

अब गुरू नानक साहब कहते हैं कि उसके सिवाय मेरा और कोई नहीं। जी और प्राण भी उसी का है, उसी के आधार पर चल रहे हैं। वह अनुभव करके कह रहे हैं। हमारी भी वही चीज है जीवन आधार, मगर हम बाहर फैलाव में जाने के कारण उसका अनुभव नहीं कर रहे हैं। बात तो यही है। उसकी आंख खुली है, वह देखता है।

मेरा किया कच्छु न होय जो हर भावे सो होय ।
जैसे में आवे खसम की बाणीं तैसा करी ज्ञान वे लालो ।।

वह अपने आपसे कुछ नहीं कहता। जो ख्यालात बगैर सोचे समझे के आते हैं, They

are always perfect वह बिलकुल ठीक होते हैं, यह एमरसन कहता है। वह मन बुद्धि के घाट से नहीं बोलता। यही फरक है It is the prophet of God speaks. जितने महापुरूष आये वह बोलते वह कुछ हैं जो उनसे प्रभु ने कहा है। वह Contacted है ना (जुड़ा हुआ है ना) प्रभु से।

गुफताये ओ गुफताये अल्लाह बबद। गरचेज अज़ हलकूमे अबदुल्लाह बबद ।।

उनका कहा हुआ प्रभु का कहा हुआ होता है, ख्वाहे जाहिरा शकल में वह इन्सानी गले से आवाज निकलती मालूम होती है। यह पक्की बाणी है, बाकी कच्ची बाणियां हैं। यही फरक है।

हौंमे ममता जल बलो लोभ जलो अभिमान।

यह दुनियाँ हौमैं में, ममता में, लोभ में, इन्द्रियों के भोगों रसों में, जल रही है। समझे! दुनियाँ में आग लग रही है। महापुरूष जब आते हैं उनका प्यार सबसे होता है। वह प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु —

जगत जलन्दा रख ले प्रभु आपन कृपा धार। जित द्वारे उभरे तित ही लेवो उभार ।।

तो कहते हैं दुनियाँ सारी ही हौमैं में जल रही है, लोभ में, अभिमान में। तो कहते हैं आखर क्या करना चाहिये ?

नानक सबद बिचारिये पाइये गुणीं निधान।

कहते हैं इसिलये शब्द का विचार करना चाहिये। शब्द किसको कहते हैं ? वही जो नाम की तारीफ है वही शब्द की है। परमात्मा अशब्द है, जब वह इजहार में आया वह शब्द हुआ। शब्द की तारीफ की है।

उतपत प्रलय सबदे होवे सबदे ही फिर ओपत होवे।

जिसके आधार पर उत्पत्ति और प्रलय होती है, और दुबारा सृष्टि का आगाज (शुरूआत) होता है, उसका नाम शब्द है। शब्द दो किसम के हैं। एक तो बाहरी यही है। इन शब्दों में भी एक पक्का शब्द है, और एक Misguidance शब्द कहो, मन बुद्धि के घाट पर है। तो इनमें भी —

एक सबद गुरू देव का।

एक और शब्द है जो गुरू देव द्वारा मिलता है, नाम या शब्द कहो, उसको बिचारने वाले बनो, उसके साथ लगो। उसका नतीजा क्या होगा ? तुम गुणों के ख़जाने को पा जाओगे। यह सब उसी का है जिसने उसको पा लिया। यह करनी का सार है याद रखो।

करनी कीरत गुरूमत सार।

वह जो अखण्ड कीर्तन हो रहा है ना, उसका पाना, यह सार है। कैसे मिलेगा ? कुदरती बात है।

सन्त सभा कर करो बिचार।

सन्तों की सोहबत में यह चीज मिलेगी। तो यह शब्द गुरू नानक साहब पहली पादशाही का है जो आपके सामने रखा गया। कितना खोल खोलकर समझाया है। बड़े अनमोल रतन हैं महापुरूषों के। कभी कोई, कभी काई, कभी कोई, किसी महापुरूष की बाणी लो, सब एक ही बात पुकारते हैं। गुरू बाणी में एक जगह आता है।

बेद कतेब पुकारन पोथियां। नाम बिना सब कूड़ गली ओछियां॥

सब ग्रन्थ पोथियां यह पुकार पुकार कर कहती हैं कि नाम के बगैर गति नहीं, बाकी सब फजूल बातें हैं। तो ''गुरूमत करनी सार,'' नाम के साथ लगना है। जिसका भण्डार है आप में। मगर उसका Connection ? जिसका Connection है (जो आप जुड़ा है) वह तुमको जोड़ देगा। है तुममें। वह बाहर से कुछ नहीं देता। थोड़ा उभार देता है, तुमको मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाने का, थोड़ा Way-up करता है, First-hand experience (अनुभव) कराता है, फिर दिनों दिन बढ़ाते चलो, तुम भी वैसी गति को पा सकते हो जिसको उसने पाया है।

साहेब कौन देश मोहे डारा।

यह धर्मदास जी की बाणी है। कहते हैं हे प्रभु ! मुझे किस देश में डाल दिया। मैं चेतन स्वरूप आत्मा, मेरा देश सच खण्ड सत्लोक, कहां का बासी कहां पड़ा हूं। हे प्रभु दया करे।

वह तो देश अजर हन्सन का, यह जग काल पसारा।

अरे भई वह देश जो है, अजर और अमर है, वहां हंस रहते हैं, जो सत्य असत्य का निर्णय करने वाले हैं, दूसरे नहीं। कहते हैं मैं कहां काल के पसारे में फंस गया। यह फैलाव में जा रहा है, मैं फंस रहा हूं। कहां का वासी, कहां फंसा पड़ा हूं।

अर्शस्त नशेमने तो शरमत वादा। कानी ओ मुकीमी खते खाक शवी॥

ऐ आत्मा तू अर्श के रहने वाली है, कहां के रहने वाली, कहां मिट्टी और पानी में फंस रही है।

तेरा धाम उधर में प्यारी, तू घर संग रहत बंधानी।

कि हे आत्मा, तेरा मुकाम था जहां यह घर नहीं है Matter नहीं है। कहां के रहने वाली कहां घर में फंस रही हैं। सौ सयाने एक ही मत। गुरू नानक साहब ने प्रार्थना की है, एक जगह फरमाते हैं कि —

तू निज घर बसेयड़ा हौं रूल भस्में ढेरी।

कि हे प्रभु तू तो निज घर बास कर रहा है, मैं मिट्टी में जलील हो रही हूं। सब महापुरूष कहते हैं भई इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाओ, जिसम को छोड़ो Learn to die so that

you may begin to live. मरना सीखो जीते जी, ताके हमेशा की जिन्दगी को पा जाओ। सौ सयाने एक ही मत। मौलाना रूम साहब फरमाते हैं।

बमीर ए दोस्त पेश अज मर्ग अगर में जिन्दगी खाही।

तुम हमेशा की जिन्दगी चाहते हो तो जीते जी मरना सीखो, पिण्ड से ऊपर आना सीखो, हमेशा की जिन्दगी को पा जाओगे। यह तालीम सन्तों की हमेशा से रही है।

देओ सबद अजर हंसन को बहुड़ न होये अवतारा।

प्रार्थना कर रहे हैं कि हमें वह शब्द दो जो हंसों को मिलता है, वह दे दो ताके आना जाना खत्म हो जाय, कि हे सत्गुरू हमको किस देश में डाल रखा है, हमें निकालो।

निर्गुण सगुण दुंद पसारा, पड़ गये काल की धारा।

देखिये कितनी आजाद ख्याली है कि निर्गुण सगुण ही में सब दुनियाँ फंस रही है। जो हम कहते हैं कि निर्गुण के उपासक बनों, अरे भई निर्गुण और सगुण जिस आधार पर हैं उसको पकड़ो। निर्गुण एक सिफत (गुण) है और सगुण भी एक सिफत (गुण) है। जो सिफत (गुणों) से ऊपर है उसको पकड़ो, गुणों से ऊपर जाओ। दुनियाँ इसी में बह रही है। कितना ऊँचा ख्याल है। हम कहां बैठे हैं।

जहां देश है सत्पुरूष का अजर अमीं आहारा।

कहते हैं वहां अमीं रस मिलता है वह सत्पुरूष का देश है; सत्नाम और सत्पुरूष का, जो काल और महाकाल के दायरे से ऊपर है, जहां न प्रलय पहुंचती है न महाप्रलय पहुंचती है। जिसने उस सत्पुरूष को जान लिया उसका नाम है सत्गुरू —

सत्पुरूष जिन जानिया सत्गुरू तिस का नांओ। तिस के संग सिख उधरे नानक हरि गुण गाओ॥

केवल ऐसे ही पुरूष की संगत से सिख का उद्धार हो सकता है।

सत्गुरू मिले तां अखीं वेखे।

आंख खुल जाती है जिससे वह नजर आता है, जब देखता है तो गाता है। उसका उद्धार हो सकता है। नीचे दर्जे के महात्मा जहां तक पहुंचे हैं वहां तक पहुंचाये ठीक है। सत्पुरूष को जिसने जाना है, वह सत्पुरूष तक पहुंचायेगा। जो आप मिडिल पास है, वह तुमको एम.ए. नहीं पढ़ायेगा। कायदे की बात है। तो With due deference to all. सबके लिये दर्जे बदर्जे इज्जत है हमारे दिल में, जो भी पिण्ड से ऊपर गये वह काबिले इज्जत (आदरणीय) हैं। कहां तक गये यह जाने से ताल्लुक है, जाकर देखो। कम से कम हमसे तो ऊंचे गये कि नहीं। और दूसरी बात मुश्किल यह है कि महापुरूषों के कलाम अपने

लिखे हुये बहुत कम मिलते हैं। पीछे इकट्ठे किये गये। हो सकता है कि कोई महात्मा ऊंचा गया हो, वह बाणी न मिली हो उनकी। इसलिये यह अन्दाजा अब लगा लेना कि कौन कहां पहुंचा, कहां नहीं, यह ठीक नहीं। इसीलिये कबीर साहब ने कहा —

बेद कहते कहो मत झूठे, झूठा सो जो न बिचारे।

चलो अन्तर। अन्तर उन Planes (मण्डलों) पर तुमको अनुभव होता है, जा सकते हो, उन महापुरूषों से मिल सकते हो, जैसे देहली में आकर तुम यहां के लोगों से मिल सकते हो, England में जाओ, वहां के लोगों को मिल सकते हो। अरे भई पिण्ड से ऊपर आओ, आगे जो लोक हैं, वहां जो हस्तियां हैं, वहां मिलाप हो सकता है, बात कर सकते हो।

धर्मदास बिनवें कर जोड़ी अबके अर्ज हमारा।

धर्मदास जी कहते हैं अब हमारी यही अर्ज है भई, हमें अपने लोक ले चलो। कहां फंस रहे हैं, दुखी हो रहे हैं, जन्म बरबाद जा रहा है।

साहेब ले चलो देश अपना। जम की भास सही नहीं जाई केही बिधि धरू ध्यान।

कहते हैं यहां तो जन्म मरन का मुकाम है, अरे भई उस देश को ले चलो जो असली अपना वतन है। ऐ गुरू ! ऐ सत्गुरू ! यह तेरे हाथ है। सत्गुरू में कौन है ? वही सत् की ताकत काम करती है। वह इन्सानी पोल पर इजहार कर रही है। वह आप में भी है। उसमें प्रगट है, हममें अभी प्रगट नहीं। बात तो यही है।

माया मोह भरम को मोटरी यह सब काल कल्पना।

यह सब काल की कल्पना है, ख्यालात फैलाव में हैं, माया मोह में फंस रही है, दुनियाँ भूल में जा रही है, Attachment (मोह) में जा रही है।

जहां आसा तहां बासा।

इसलिये बार बार आ रही है। अगर इससे हटना नसीब हो जाये, कैसे हट सकते हैं, वही तो मुश्किल है।

गुरू दिखलाई मोरी जित मृग पड़त है चोरी। मून्द लिये दर्वाजे तां बाज लिये अनहद बाजे।

उस नाद में जाने से काम बनेगा ना ! वह कब होगा ? जब बाहर से हटोगे। इन्द्रियों का जितना पसारा है वह सब काल का, फंसाने का जरिया है। इससे ऊपर आओ,

माया मोह भरम सब काटो दीजे पद निर्वांना।

तृगुण अतीत अवस्था को भई बखशो हमको, यह माया मोह सब आने जाने का पसारा है। इससे बाहिर निकालो। जो त्रिगुण अतीत अवस्था को पा गया उसका आना जाना

खत्म हो गया।

साहेब ले चलो देश अपना। अमर लोक वह देश सुहेला हंसा कोन पयाना॥

कहते हैं वह अमर देश है। वहां कोई हंस बृतियां जाती हैं, जो सत् असत् का निर्णय कर सकती हैं। दूसरे लोग नहीं।

धर्मदास बिनवें कर जोड़ी आवागमन नसाना।

कहते हैं उस देश में ले चलो, आना जाना खत्म हो जाये। हे सत्गुरू ! दया करो हम पर। बात तो यह है। तो यह दो तीन शब्द थे जो आपके सामने रखे गये। बात तो वही है जो सभी पुकार-पुकार कर कहते रहे। और उसी के हम पुजारी हैं। किसी समाज में रहो भई। समाजें सब अच्छी, बोले सब अच्छे, फैलाव से हटो। वह चीज तुममें है। कैसे हट सकते हो ? उसका Contact कैसे मिलता है ? जिन्होंने पाया है उनकी सोहबत करो, बड़े थोड़े लफ्ज़ों में। उसका नाम कुछ रख लो। यह है तालीम जो हमेशा से चली आई है, न बदली है न बदल सकती है। समझे ! बाकी जितना किसी ने पाया है उसके मुताबिक बयान किया, अपने अपने Level से, मगर सन्तों का Level सब से ऊंचा है। अगर सच्चे विचार को पाना है, Right Understanding को पाना है, तो उनकी सोहबत करो। वह मन बुद्धि के घाट से नहीं, वह ऊपर से Talk करते हैं, और दूसरों को उसका अनुभव करा सकते हैं। देखो प्रभु की बातें करते हुये भी कितनी शान्ति मिलती है। अरे भई अगर वह मिल जाये तो क्या कहना। भई कहीं भी रहो, किसी समाज में भी रहो, जीवन को नेक पाक और सदाचारी बनाओ, बाहर इन्द्रियों के रसों भोगों से हटो, जरा संयम में लाओ ऊपर आओ, किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में बैठकर उसका Contact ले लो। दिनों दिन कमाई करो, तुम्हारा जीवन सफल हो जाये, बस। मतलब थोड़े लफ्ज़ों में यही है। ❑

✦✧✦

रूहानी सत्संग नि:शुल्क भेजे जाते हैं।
Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.